अध्याय दो

अमरकांत की कहानियों का सामाजिक संदर्भ

अध्याय दो
अमरकांत की कहानियों का सामाजिक संदर्भ

अमरकांत की कहानियाँ स्वाधीनता के बाद लिखी हुई है। अतः उनमें ज़्यादातर स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक जीवन का अंकन हुआ है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में नयी सरकार के सुशासन की ओर ध्यान देने के स्थान पर सत्ता के मोह में पड जाने के कारण देश में अराजकता, अनुशासनहीनता, बेरोज़गारी, आर्थिक अभाव जैसी समस्याएँ बढ़ी। मोहभंग ने जनजीवन में निराशा को जन्म दिया। जो समस्याएँ पराधीन भारत में जनता को झेलनी पडी थी, वह स्वाधीन भारत में तेज़ हो गयीं। प्रस्तुत अध्याय में अमरकांत की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक जीवन का अध्ययन हुआ है।

2.1 समाज : अर्थ एवं परिभाषा

'समाज' शब्द के लिए अनेक अर्थ प्रचलित है। 'समाज' शब्द की उत्पत्ति लैटिन के 'societies' धातु से हुई है, जिसका अर्थ समाज, संगति, मंडल, संस्था है। हिन्दी शब्द सागर में इसके लिए समूह, दल, गिरोह, संघ आदि शब्द प्रचलित है। समाज की परिभाषा देते हुए डॉ. हेतु भरद्वाज ने कहा है कि "समाज ऐसे व्यक्तियों का समूह है, जिनकी समान आदतें हैं, जिनकी समान रुचियाँ है, समान

विचार है तथा ये आदतें, रुचियाँ तथा विचार उन्हें संगठित रखने के लिए पर्याप्त है।"[1] सामान्य रूप से समाज से अभिप्राय सामुदायिक जीवन के ऐसे अनवरत एवं नियामक व्यवस्था से है, जिसका निर्माण व्यक्ति पारस्परिक हित तथा सुरक्षा के निमित्त जाने-अनजाने कर लेते हैं। समूह में रहते हुए व्यक्ति को अन्न, वस्त्र इत्यादि की, ज़रूरत होती है जो जीने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इनके साथ ही व्यक्ति में सुरक्षात्मक भावना सतर्क होती है। फलस्वरूप वह सहजीवन की इच्छा से एक दूसरे के नजदीक आता है तथा समूह का निर्माण करके विशिष्ट स्थान पर एक दूसरे के सहारे रहने का प्रयास करता है। इससे स्पष्ट है कि समाज केवल व्यक्तियों की एकाधिक संख्या से बना हुआ समुदाय नहीं है तो मनुष्य ने परस्पराश्रित और सहयोग पूर्ण जीवन की इच्छा से समाज का निर्माण किया है।

मानव समाज में स्त्री पुरुष संबन्धों के विभिन्न रूप होते हैं। अतः समाज की स्थापना में इन रिश्तों, संबन्धों का भी अपना महत्व है। मानव संबन्धों में व्यक्ति की एक दूसरे के प्रति आत्मीयता की भावना होना सहज अपेक्षित है। मानव स्वभाव संबन्ध के स्वरूप को प्रभावित करता है। प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव एवं व्यवहार विशिष्ट होता है। समकालीन परिवेश का भी प्रत्येक व्यक्ति पर विशिष्ट प्रभाव होता है। इस प्रकार समाज में व्यक्ति-स्वभाव, व्यक्ति-व्यक्ति के आपसी व्यवहार, परिवेश एवं परिवेश की सामूहिक क्रिया-प्रतिक्रियाएँ, इनके आधार पर सामाजिक परिवेश का निर्माण होता है। यह परिवेश परिवर्तनशील है। "समाज

---

1. डॉ. हेतु भरद्वाज, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव प्रतिभा, पृ. 19

स्वयं में एक विशाल परिवार है। वह केवल व्यक्तियों का संकलन मात्र नहीं है, तो उन व्यक्तियों के समुदाय में परस्पर सहयोग, व्यवहार, भाषा, संस्कृति आदि संपन्न होते हैं। जिस प्रकार शरीर के अन्यान्य अवयवों में भिन्नता के बावजूद संबन्ध रहता है वे स्वतंत्र होते हुए भी परस्परावलंबी रूप में कार्य करते हैं, उसी प्रकार समाज के सारे व्यक्ति स्वतंत्र होते हुए भी परस्पराश्रित हैं और उनके इस स्वस्थ संबन्ध पर ही समाज का विकास निर्भर है।"[1] संक्षेप में कह सकते हैं कि मनुष्य ने अपनी सुरक्षा और विकास के लिए जिस संस्था का गठन किया, वह समाज है।

2.2 व्यक्ति और समाज

व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। समाज से अलग होकर उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है। डॉ. नगेन्द्र के शब्दों में "व्यक्ति साध्य है समाज उसका साधन, समाज स्वतंत्र व्यक्तियों का समूह है। मनुष्य पहले व्यक्ति है, पीछे समाज की इकाई और उसका पहला रूप ही मौलिक है।"[2] स्वतंत्र होकर भी व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों पर निर्भर रहना ही पड़ता है।

व्यक्ति ही समाज का केन्द्रबिंदु है। वह चाहे तो सामाजिक व्यवस्था को बिगाड सकता है और उसका विकास भी कर सकता है। व्यक्ति जब अपने स्वार्थलाभ के लिए अपनी सार्वजनिक उपयोगिकता को भूल जाता है तो समाज का विकास अवरुद्ध होता है। महादेवी वर्मा के शब्दों में "व्यक्ति जब वैयक्तिक हानि-

---

1. सैयद मन्जूर, प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, पृ. 15
2. डॉ. नगेन्द्र, आस्था के चरण, पृ. 268

लाभ को केन्द्रबिंदु बनाकर अपनी सार्वजनिक उपयोगिता भूलने लगता है तब समाज की व्यवस्था और उसके सामूहिक विकास में बाधा पड़ने लगती है। भिन्न-भिन्न स्वभाव और स्वार्थ व्यक्तियों के आचरणों में कुछ विषमता अवश्य ही रहती है परंतु इस विषमता की मात्रा सामंजस्य की मात्रा के समान या उससे अधिक हो जाती है तब समाज की सामूहिक प्रगति दुर्गति में परिवर्तित होने लगती हैं।"[1] स्पष्ट है कि समाज का उत्थान एवं पतन व्यक्ति के माध्यम से ही होता है।

2.3 सामाजिक चेतना

चेतना प्राणीमात्र में रहनेवाला वह तत्व है जो उसे जड़ पदार्थों से भिन्न बनाता है और उन्हें चैत्य सम्पन्न बनाकर जीवधारी सिद्ध करता है। "सामाजिक चेतना संयुक्त सामाजिक शब्द है। समस्त पद के रूप में सामाजिक चेतना में समाज और चेतना दोनों का सम्मिलित अर्थ समाविष्ट होता है। सामाजिक चेतना समाज की आबाधित, अनवरत और विकासशील प्रवृत्ति है। यही मानव समाज को पशु से विभक्त करती है।"[2] मार्क्सवाद के अनुसार इस भौतिक जगत का अस्तित्व प्राथमिक और मनुष्य की चेतना अथवा इच्छा से स्वतंत्र है। चेतना पदार्थ के एक विशिष्ट गुण के रूप में इसी भौतिक जगत से उद्‌भूत होती है जिसके विकास के अपने नियम हैं और अपनी स्वतंत्र प्रक्रियाएँ हैं। मनुष्य भी इसी पदार्थ से विकसित हुआ उसका श्रेष्ठतम रूप है और अपने एक विशिष्ट गुण के रूप में उसने अपनी चेतना को विकसित किया है। चेतना का यह गुण मानव-शरीर से पृथक या स्वतंत्र नहीं

---

1. महादेवी वर्मा, मेरे प्रिय निबंध, पृ. 105
2. लाला साहेब सिंह, हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना, पृ. 7

है, अतः चेतना चाहे जितनी अतीन्द्रिय प्रतीत हो, वस्तुतः एक बोधगम्य व्यावहारिक और भौतिक शक्ति है। इस शक्ति के विकास को ही हम मानव-समाज और संस्कृति का इतिहास कहते हैं जिसके दौरान मनुष्य ने न केवल बाह्य प्रकृति या पदार्थ का, अपितु अपना ही मानवीय सृजन किया है, क्योंकि मनुष्य स्वयं भी प्रकृति या पदार्थ ही है, जो अपना सृजन अपने आप करता है। चेतना वस्तुगत यथार्थ के प्रतिबिंबन का सर्वोच्च रूप है, जो केवल मनुष्यों में पाया जाता है। यह उन मानसिक प्रक्रियाओं का संपूर्ण योग है, जो मनुष्य द्वारा वस्तु जगत और निजी अस्तित्व को समझने में सक्रिय रहती हैं। यह स्वयंभू नहीं, अपितु सामाजिक विकास प्रक्रिया से और सामाजिक प्रगति के विशेष चरणों में विकसित हुई है अतः इसे सामाजिक चेतना के रूप में ही समझा जा सकता है।

समाज समष्टि का दूसरा नाम है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो व्यष्टियों के समुदाय का नाम ही समाज है। समाज शास्त्र के अनुसार समाज की परिभाषा अपेक्षाकृत वैज्ञानिक एवं यथार्थ है। तदनुसार विभिन्न मनुष्यों के अपने भिन्न-भिन्न व्यापारों के कारण उनमें परस्पर उत्पन्न हुई व्यवस्था का नाम समाज है, जिसमें व्यक्ति का महत्त्व सर्वस्वीकृत है। अतः कह सकते हैं कि व्यष्टिचेतना ही समष्टि चेतना का मूलाधार है।

2.4 स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज

प्राचीन काल से लेकर सामाजिक परंपराएँ और आचारों का महत्व अक्षुण्ण रहा क्योंकि उस समय उन्हें धर्म और नैतिकता का संरक्षण प्राप्त था।

लेकिन आधुनिक युग तक आते-आते वे अपना महत्व खोने लगे। भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में आए बदलाव के कारण व्यक्ति और समाज के संबन्धों पर पुनर्विचार की आवश्यकता पडी। सामाजिक मान्यताओं की सार्थकता पर प्रश्न उठने लगे। नयी पीढ़ी में यह धारणा दृढ़ होती गई कि सामाजिक परंपराएँ और धारणाएँ व्यक्तित्व विकास के लिए बाधक है। इसलिए उसको अस्वीकृत किया जाए। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जन्मी पीढ़ी में परंपरागत सामाजिक मूल्यों के प्रति विद्रोह का भाव दिखाई देता है।

"स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जन्म धारण करनेवाली युवा पीढ़ी ने अपने चारों और भ्रष्टाचार, घूसखोरी, चोरबाज़ारी, महंगाई, अंधकारपूर्ण भविष्य, जीवन की सुख सुविधाओं का अभाव, राजनीतिज्ञों की अनैतिकता और आदर्शहीनता, स्वार्थपरता, भाई-भतीजावाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, जीर्ण-शीर्ण शिक्षा पद्धति, बेकारी संक्षेप में जीवन की सारी विद्रूपताएँ, कुरूपताएँ और जीवन के अभाव आदि को सुरसा की भाँति मुँह बाए खडा देखा। उसने जीवन का खंडित रूप देखा और वह भटकी साथ ही आक्रोश से पूर्ण हो गई और उसने विद्रोह करने की ठान ली।"[1] स्वतंत्रता के बाद का हिन्दी कहानी साहित्य इसका बुलंद दस्तावेज़ है। स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों ने स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज पर लैंस मोहभंग की स्थिति, कुंठा, संत्रास, घुटन, बेरोज़गारी आदि सामाजिक यथार्थों का खुला चित्र प्रस्तुत किया है।

---

1. डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 9

2.5 अमरकांत की कहानियों में भारतीय समाज

स्वतंत्रता पूर्व युग में जन्मे और स्वतंत्रता के तुरंत बाद साहित्य के क्षेत्र में उतरे अमरकांत ने सजीवता के साथ इन परिस्थितियों को अपनी कहानियों में उकेरा है। उनकी कहानियाँ स्वातंत्र्योत्तर युग के सामाजिक यथार्थ का खुला आइना है। रवीन्द्र कालिया के शब्दों में "अमरकांत के लिए लेखन एक सामाजिक दायित्व है। वे मानते हैं कि लेखन समय और धैर्य की माँग करता है। उनकी शीर्ष कहानी पढ़ने पर प्रामाणित होता है कि आरंभ से ही इस रचनाकार ने अप्रतिम सहजता के साथ-साथ सजगता से भी इन कहानियों की रचना की है।"[1] उनकी कहानियाँ वास्तव में कोई सुनी-सुनाई घटनाओं का वर्णन नहीं, आँखों-देखा, उनका भोगा हुआ यथार्थ है।

अमरकांत की कहानियों का सामाजिक आधार मध्यवर्ग है। उनकी अधिकांश कहानियाँ निम्न मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्र खींचनेवाली है। अमरकांत जी के शब्दों में "मध्यवर्ग अब बहुत विस्तृत हो गया है। निम्न मध्यवर्ग की हालत मज़दूरों के बराबर ही है। कुछ ऐसे हैं जो मज़दूर हैं..... मगर हालत अच्छी है। सार्वजनिक क्षेत्रों में लगे मज़दूर बेहतर हालत में है। कथाकार किसी भी वर्ग का चित्रण करें विशिष्ट में सामान्य की खोज करें।"[2] वास्तव में अमरकांत की कहानियों में मध्यवर्ग खासकर निम्न मध्यवर्ग के जीवनानुभवों और जिजीविषाओं को बहुत ही मार्मिकता के साथ आवाज़ मिली है।

---

1. अमरकांत, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, भाग-1, भूमिका से
2. अमरकांत, कुछ यादें, कुछ बातें, पृ. 131

मध्यवर्ग भिन्न-भिन्न व्यवसाय करनेवाले लोगों के सम्मिलित समूह हैं, जिनके काम-धंधे, व्यापार अथवा जीविका के साधन अलग होते हुए भी उनकी जीवन स्थितियों में विशेष अंतर नहीं होता। डॉ. देवकिशन चौहान के शब्दों में "मध्यवर्ग की पहचान के लिए प्रायः कहा जाता है कि यह न धनी, न निर्धन होता है, सुखपूर्वक जीता है, सभी मजबूरियाँ होती है तथा इसके पास विलास के कुछ साधन होते हैं। ये किसी छोटे व्यापार के स्वामी हो सकते हैं अथवा किसी काम धंधे के स्वतंत्र अधिकारी हो सकते हैं।"[1] स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में मध्यवर्ग मोटे-मोटे दायरे के अंतर्गत आमदनी, व्यवसाय और शिक्षा की दृष्टि से कई तबकों में विभक्त था। खेतिहर गरीबों की विशाल संख्या तो इसमें शामिल थी ही नहीं, अकुशल और अर्द्धकुशल मजदूर, कुशल श्रमिक, छोटे क्लर्क एवं ड़ाकिये कांस्टेबिल, सिपाही व चपरासी सरीखें कर्मचारी भी इसके अंग नहीं थे। दूसरे सिरे पर धनी उद्योगपति, बहुत बड़े ज़मीन्दार व ताल्लुकेदार और राजवाडों के सदस्य इसके दायरे के बाहर की चीज़ थे। "इन दोनों सिरों के बीच आनेवाले सरकारी कर्मचारी, डाक्टर, इंजिनीयर व वकील जैसे प्रशिक्षित व्यवसायी और व्यापारिक उद्यमी खाते-पीते व्यापारी बडे शहरों के स्कूलों व उच्च शिक्षा के संस्थानों के अध्यापक, पत्रकार, शिक्षित या आंशिक रूप से शिक्षित मँझोले किसान, निजी क्षेत्र में कार्यरत वेतनभोगी, विधायक और विश्वविद्यालय के छात्रों का एक बडा हिस्सा मध्यवर्ग का निर्माण करता था।"[2] स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में मध्यवर्ग के व्यक्ति समस्याओं

---

1. डॉ. देवकिशन चौहान, समसामयिक नाटकों में वर्ग चेतना, पृ. 28
2. पवन कुमार वर्मा, भारत के मध्यवर्ग की अजीब दास्तान, पृ. 39

के घेरे में थे। स्वयं अमरकांत ने भी इन समस्याओं को देखा है और भोग भी है। अमरकांत की कहानियों में चित्रित इन सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण आगे किया जाएगा।

2.5.1 मोहभंग

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में अव्यवस्था छा गई। उदासीनता घुटन और निराशाजनक परिस्थितियों ने जन्म लिया। मोहभंग ने व्यक्ति को अधिक उलझन में डाल दिया। स्वतंत्रता आंदोलन के समय जिस स्वप्न को लेकर लोगों ने अपने प्राणों की बली चढाई थी, वह एकदम अर्थहीन हो गया। जनता ने जिस नैतिक लोकतंत्र का सपना देखा था, वह मिट्टी में मिल गया। लोकतंत्र के भीतर पूँजीवादी सामंतवादी शक्तियों ने भ्रष्टाचार को बढावा दिया। जनता के बीच स्वप्न भंग और मोहभंग की स्थितियाँ उत्पन्न होने लगीं।

अमरकांत जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्वतंत्रता की स्मृतियाँ तथा स्मृतिभंग को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों की एक विशेषता यह है कि वे मोहभंग के बाद की सही ज़मीन की तलाश की उम्मीद को नहीं छोडते।

अमरकांत की कहानी 'बस्ती' का पात्र आत्मानंद इस मोहभंग का शिकार है। अपनी बस्ती के विकास के लिए रामलाल और बाँकेलाल के साथ वह कठिन मेहनत करता है। आंदोलन चलाता है। रामलाल असीम नेतृत्व शक्तिवाला व्यक्ति

है। वह आन्दोलन का नेतृत्व करता है। आत्मानंद आंदोलन में शामिल हो जाता है। दो वर्ष के आंदोलन के बाद वे सफलता हासिल करते हैं। "यह बस्ती हमारी न्यायसंगत आकांक्षाओं की साकार प्रतिमा है। इसकी एक-एक ईंट हमारे संघर्ष और इच्छाशक्ति की कहानी कहती है। इन्हीं गुणों से कोई जाति तरक्की करती है।"[1] अमरकांत ने प्रतीकात्मक ढंग से भारत और स्वतंत्रता आंदोलन की ओर संकेत किया है। बाद में गली की ईंटें उखडने लगीं। गली के संरक्षकों ने ही उसकी चोरी की। बस्ती में खलबली मच गयी। कहानी के अंत में आत्मानंद की स्थिति को अमरकांत ने यों व्यक्त किया है - "आत्मानंद जैसे जड़ हो गया। ....उसके दिमाग में अनोखे विचार उठा करते। कभी वह क्रोध, घृणा और विद्रोह की भावना से कांपने लगता। कभी ईर्ष्या एवं महत्वाकांक्षाओं की लहरों पर झूलने लगता। कभी व्यर्थता और उदासीनता से ग्रस्त। कभी-कभी उसके सामने कई विचार और रास्ते उभर आते लेकिन उसकी समझ में नहीं आता कि सत्य क्या है। आखिर सत्य क्या है।"[2] यही तो स्थिति थी स्वतंत्र भारत की जनता की भी। स्वाधीनता के बाद जो शांति और सुरक्षा के सपने देखे थे वे अब व्यर्थ हो गए थे और वे अपने ही देश के संरक्षकों से विश्वासघात की शिकार हुई।

'कुहासा' नामक कहानी आज़ादी के बाद भारतीय समाज के निचले तबके के लोगों की ज़िंदगी में छाये कुहासे का बयान करती है। प्रस्तुत कहानी में अपने घर की प्रतिकूल परिस्थितियों से तंग आकर शहर की ओर पलायन किए दूबर

---

1. अमरकांत, बस्ती, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 386
2. वही, पृ. 393

नामक लडका आजीविका चलाने के लिए छोटे-मोटे काम करता है। उपचुनाव आने पर रामचरण नामक आदमी चुनाव प्रचार के लिए उसे ले जाता है, बदले में उसे रिक्शा और मकान दिलाने का वादा करता है। इस झूठे वादे से प्रभावित होकर वह ढेर सारे सपने देखने लगता है - "....रिक्शा और मकान मिलने पर वह खूब पैसे कमाएगा। फिर वह अपने माँ-बाप और भाई-बहनों को अपने पास बुलाएगा। अपने बप्पा से कहेगा, तुम चुपचाप बैठकर आराम करो। तुमने ज़िंदगी में बहुत तकलीफ सही है, अब किसी की गुलामी करने की ज़रूरत नहीं है। दूबर जब तक ज़िंदा है, तुम चिन्ता परवाह न करो, दोनों जून डटकर खाओ और दिन भर बीडी - तमाखू पिओ। माँ से कहेगा, अब रोटी-नून खाने की ज़रूरत नहीं है, डटकर अरहत की दाल और आलू-बैंगन की तरकारी बनाओ, तुम्हारा दूबर किसी चीज़ की कमी नहीं होने देगा....।"[1] लेकिन वादों से वह वंचित होता है। उसका सपना टूट जाता है। यह मोहभंग का दूसरा रूप है।

'जनमार्गी' कहानी भी इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। इसमें अलग किस्म के स्मृति और तनाव से उत्पन्न मोहभंग को पेश किया गया है। बलराज नामक जनकवि जो स्वाधीनता आंदोलन का भागीदर है, उनकी कहानी है। स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने से उसे जेल जाना पडा। अपने प्रेम को भी कुरबान करना पड़ा। आज़ादी के बाद उनकी स्थिति कुछ दयनीय हो गई। राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में उसने काम किया और अखबार में भी नौकरी संभाली। लेकिन बीमारी के कारण उसे नौकरी छोडनी पडी। वह पूरी तरह बेकार हो गया। उनके लिए आज़ादी

---

1. अमरकांत, कुहासा, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 2, पृ. 23

निरर्थक बन गई। इसी प्रकार 'डिप्टी कलक्टरी', 'इंटरव्यू' आदि कहानियाँ प्रत्याशित नौकरियों से वंचित युवकों के मोहभंग की कहानी है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में जनता हर तरीके से मोहभंग की शिकार बन गई। मोहभंग ने उनकी ज़िंदगी में बहुत बडी कठिनाइयाँ उत्पन्न कर दीं। इसका प्रत्यक्ष दृष्टा होने के कारण अमरकांत ने इस समस्या को अपनी कहानियों में बखूबी उकेरा है।

2.5.2 बेरोज़गारी

स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बडी और खतरनाक समस्या थी बेरोज़गारी। स्वतंत्रता के बाद देश के नवयुवकों में यह उम्मीद जगी की कि उनकी समस्याएँ हल हो जाएँगी तथा उन्हें उचित काम-दाम मिलेगा और ज़िंदगी सुचारू रूप से आगे चलेगी। लेकिन यहाँ भी उनके सपनों पर तुषारपात हुआ। शिक्षित होने पर भी उन्हें आवारा होकर घूमना पडा। मतलब युवा पीढ़ी दिशाहारा बन गई। "बढती महंगाई और बेरोज़गारी से अपने अस्तित्व के लिए सामान्य जनता का संघर्ष और भी तीव्र हो गया। इन सबका प्रभाव हमारे सामाजिक जीवन में प्रतिफलित होने लगा।"[1] साहित्यकार चुप न रह सके। अपनी रचनाओं के द्वारा इन समस्याओं को पाठकों

---

1. The common people's struggle for existence became more intense, with escalating prices and increasing unemployment. The effect of all this could not but be felt in our social life and our perceptions - Aunthology of Hindi short stories - Bhishma Sahini

के सम्मुख पेश करते रहे। अमरकांत ने 'इंटरव्यू', 'डिप्टी कलक्टरी', बेरोज़गारों की बात आदि कहानियों के माध्यम से इस भीषण समस्या का खुलासा किया है।

'डिप्टी कलक्टरी' अमरकांत की बहुचर्चित कहानी है। स्वतंत्रता संग्राम ने देश की जनता खासकर पीडित जनता की चेतना में यह स्वप्न पैदा किया था कि देश के आज़ाद होते ही उसकी समस्याएँ हल हो जाएँगी और उसके सपने पूरे होंगे। इस तरह के स्वप्न के पीछे यह विचार था कि उसकी ज़िंदगी की सारी समस्याएँ अंग्रेज़ी राज में पैदा हुई थी और उसके जाते ही इतने अवसर और रास्ते ज़िंदगी के लिए खुल जाएँगे कि बेशक ज़िंदगी बदल जाएगी। अमरकांत प्रस्तुत कहानी के माध्यम से बिना किसी लाग लपेट के बता देते हैं कि सपने टूट रहे हैं, सपने ही क्या टूटते मनुष्य के व्यक्तित्व ही टूटता दिखाई पड़ता है। यह तो 'डिप्टी कलक्टरी' की सामाजिक पृष्ठभूमि है। प्रस्तुत कहानी में शकलदीप बाबू मध्यवर्गीय परिवार का व्यक्ति है। पेशे के वह मुख्तार है। अपने बेटे नारायण को डिप्टी कलक्टर बनाने के उद्देश्य को संपूर्ण बनाने के लिए वह उधार लेकर नारायण की फीस भरता है, और आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त कराता है। दो बार फेल होने के बाद तीसरी बार नारायण डिप्टी कलक्टरी की परीक्षा पास हुआ। उनका इंटरव्यू भी अच्छा रहा। लेकिन जब फल निकला तो उनका नाम सोलहवाँ नंबर पर था पर दस लोगों की ही लिया गया था।

'इंटरव्यू' राशनिंग विभाग में होनेवाले भ्रष्टाचार से नौकरी की समस्या को झेलनेवाले युवकों की कहानी है। पहली बात तो यह है कि इंटरव्यू बहुत देरी से शुरू होती है। दूसरी बात यह है कि बहुत देर तक इंटरव्यू की प्रतीक्षा में खडे रहे उम्मीदवारों को अंत में यह सूचना प्राप्त होती है कि उक्त पद के लिए योग्य व्यक्ति

को चुन लिया गया है। प्रस्तुत प्रसंग को अमरकांत जी ने यों व्यक्त किया है - "यह सूचित करते हुए हमें खुशी हो रही है कि हमने इस जगह के लिए योग्य व्यक्ति को चुन लिया है। इस हालत में अब और लोगों का इंटरव्यू लेना संभव नहीं था। अब शाम हो गयी है। आप लोग जिस तरह से यहाँ कष्ट करके आये और शाँतिपूर्वक खडे रहे उसके लिए हम आपको धन्यवाद देते हैं, साथ ही साथ यह भी आश्वासन देते हैं कि भविष्य में और जगहें खाली होने पर आप सबको मौका दिया जाएगा।"[1] यह आज की सामाजिक सच्चाई है। समाज में शिक्षित युवकों के बेरोज़गार होकर घूमने का एक कारण यह है।

'बेरोज़गारों की बात' कहानी के द्वारा दो बेरोज़गार युवकों की आपसी बातचीत के माध्यम से उन लोगों की दयनीय स्थिति का खुलासा किया गया है। व्यंग्यात्मक भाषा में इन बातों को प्रभावशाली ढंग से उन्होंने प्रस्तुत किया है। कहानी कालीचरण और वाहिद की बातचीत से आगे बढ़ती है। बढ़ती महंगाई और बेरोज़गारी भारतीय समाज की बहुत बडी समस्या थीं। इन दोनों समस्याओं को अमरकांत ने कहानी में यों प्रस्तुत किया है - "इस बेरोज़गारी की महँगाई में मोटे परॉठे के मामले में कुछ दिक्कत हुई होगी?"[2]

कालीचरण ने हँसते हुए कहा, 'यार इस अंडे को लेकर जन समाज में कई विवाद और बहसें चल रही है.... जब से हिन्दुए अंडा खाने लगे हैं, हमारा अंडा सोने की तरह महँगा हो गया है।'

---

1. अमरकांत, इंटरव्यू, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 19
2. वही, पृ. 19

.....

'हाँ, कठिनाई में तो पड ही गयी थी, मगर बहस में पीछे रहनेवाली नहीं थी। हकला-हकलाकर बोली-खूब कह रही हो, उल्टे जब से मुसलमान मिठाई खाने लगे हैं, हमारे लड्डू-पेड के दाम आसमान छूने लगे हैं।"[1] इस प्रकार बढ़ती महंगाई और बेरोज़गारी की समस्या को व्यंग्य के माध्यम से अमरकांत जी ने प्रस्तुत किया है।

अमरकांत जी की कहानी 'दोपहर का भोजन' भी बेरोज़गारी और उससे उत्पन्न गरीबी का सशक्त दस्तावेज़ है। कहानी में परिवार का एकमात्र आश्रय पति की नौकरी थी, उसके चले जाने से परिवार में आर्थिक विवशता बढ़ जाती है। बडे बेटे को भी नौकरी मिली नहीं है। वह नौकरी के लिए घूमता रहता है। इस समस्याओं के बीच गृहस्थी संभालने के लिए कठिन प्रयत्न करनेवाली सिद्देश्वरी को अमरकांत ने कहानी में प्रस्तुत किया है।

अमरकांत ने इन कहानियों के माध्यम से बहुत बडी सामाजिक सच्चाई का पर्दाफाश किया है जो उस ज़माने की ही नहीं बल्कि वर्तमान युग की भी एक बुलंद समस्या है। उच्चशिक्षा प्राप्त बेरोज़गारों की संस्था हर साल बढ़ती रहती है। अपनी योग्यता और प्रतिभा के अनुरूप आज यहाँ नौकरी मिलनेवाले बहुत कम ही है। फलस्वरूप शिक्षित युवकों को आवारा होकर घूमना पडता है। उच्च शिक्षा प्राप्त पीढ़ी यह चाहती है कि अपनी योग्यता के अनूरूप, हैसियत के अनुरूप नौकरी प्राप्त हो, उससे कम हैसियतवाली नौकरी करने के लिए वे लोग तैयार ही नहीं

---

1. अमरकांत, बेरोज़गारों की बात, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 218

होते। उनकी मानसिकता इसके अनुरूप गढ़ गयी है। इसमें बदलाव लाना बहुत ही मुश्किल काम है। आज बढ़ती बेरोज़गारी का एक प्रमुख कारण भी यही है। इन कहानियों की मूल समस्या अर्थ से जुडी हुई है। इसलिए इनका विशद विश्लेषण चौथे अध्याय के अंतर्गत किया जाएगा।

2.5.3 धर्म, ईश्वर और भाग्य पर विश्वास

समाज में ईश्वर व धर्म के प्रति आस्थापूर्ण विचारधारा व्यापक रूप में द्रष्टव्य है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में जो मोहभंग की स्थिति उत्पन्न हुई थी, उसने साधारण जनता में ऐसे विश्वासों को मज़बूत बनाया। लोग अपनी समस्याओं को ईश्वर की नियति कहकर अपने मन को सांत्वना देते रहे। फलस्वरूप इन विश्वासों का फायदा उठानेवाले सुविधाभोगी वर्ग का उदय हुआ। स्वार्थी और सुविधा संपन्न वर्ग यह नहीं चाहता था कि आम जनता में वैज्ञानिक चेतना जागे या उसमें जीवन जगत के प्रति यथार्थवादी भावबोध विकसित हो सकें। वह हमेशा शोषणवाली व्यवस्था को कायम रखना चाहता था और इसके लिए धर्म और ईश्वर को अपना औजार बनाया गया। मतलब धर्म अक्सर उन लोगों के हाथों का औजार और ईश्वर उनके हाथों का खिलौना बन जाता है जो समाज को पीछे ले जाने की साजिश में शामिल होते हैं और कर्म के स्थान पर भाग्य को तरजीह देते हैं।

अमरकांत की 'जन्मकुंडली' इस दृष्टि से महत्वपूर्ण कहानी है। इसमें शिवदास बाबू सुविधा संपन्न वर्ग का प्रतीक है जो भाग्य और ईश्वर के नाम पर सुख भोगता रहता है और दूसरी ओर भैयालाल है जो कठिन मेहनत करने पर भी

सुखमय जीवन नहीं बिता सकता। सामाजिक व्यवस्था के इस दोष को ईश्वर की देन बताते हुए शिवदास बाबू कहता है - "सब वही कराता है, वही रंक को राजा और राजा को रंक बनाता है। जब वह चाहेगा, तभी मन में विचार व इच्छाएँ भी उत्पन्न होंगी और योजनाएँ बन जाएँगी। उसने हर प्राणी, मनुष्य, भालू, शेर, बन्दर, चींटी, चींटे, कीडे-मकौडे, चिरई-चुरंग की किस्मत पहले से ही तैयार कर रखी है..."[1] भैयालाल को रहने के लिए अपनी कोठरी देते हुए वह कहता है - "दुखिया गरीबों के लिए मैं जान देता हूँ, नहीं तो इस कोठरी का किराया दो सौ, ढाई सौ फौरन मिल जाय। तुम्हें जो जुरे, दे देना - दो रुपया, एक रुपया, आठ आना जो भी हो।"[1] गरीबों के प्रति इतनी चिंता करनेवाला आदमी अवसर आने पर कोठरी का किराया बढाता भी है। शिवदास बाबू भैयालाल से पूछता है-

"'रिक्शा मालिक को कितना देते हो?'

'चार रुपये मालिक'

'बहुत कम है। इस कोठरी का कुछ देना पडता है तुम्हें? मुझे याद नहीं आ रहा है....'

'दो रुपये मालिक'

'भई यह कम है। समझो, तुम मुफ्त में राजमहल में रह रहे हो। मैं भी कहूँ... खैर। हाँ, इस समय मैं कुछ परेशानी में हूँ और तुम लोग हो कि नोट बटोरे जा रहे हो। भई तुम अब दे सकते हो, इस कोठरी का किराया अब तुम्हें चार रुपये

---

1. अमरकांत, जन्मकुंडली, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 2, पृ. 105
2. वही, पृ. 110

देने पडेंगे...।"[1] गरीबों की स्थिति पर अफसोस प्रकट करनेवाला शिवदास बाबू को एक मामूली रिक्शा चालक की कमाई नहीं देखी जाती। वह भैयालाल से मुफ्त में काम भी कराता है और किराया भी बढ़ा देता है। शिवदास बाबू ने एक ज्योतिषी से अपनी जन्मकुंडली दिखाई थी। ज्योतिषी ने उनके भविष्य का जो खाका खींचा था उसी के अनुरूप वह चलता था। चुनाव में वह इसलिए खडा होता है कि ज्योतिषी, भाग्य रेखाएँ, उनके पक्ष में हैं। "चुनाव में उन्हें अवश्य खडा है, क्योंकि ग्रह, नक्षत्र, भाग्यरेखाएँ, ज्योतिषी, ईश्वर सब उनके पक्ष में है।"[2] शिवदास बाबू यह सोचकर संतुष्ट हो जाता है कि भैयालाल जैसे लोग अपनी जन्मकुंडली नहीं बनवा सकते क्योंकि उनके पास पैसा नहीं है और जिनके पास पैसा नहीं है उसकी जन्मकुंडली कौन बनाएगा। अमरकांत इस प्रकार धर्म, ईश्वर व भाग्य का संबन्ध आर्थिक व्यवस्था की नियतियों से जोडते हैं।

अमरकांत ने अपनी कहानियों के माध्यम से उन स्थितियों पर व्यंग्य किया है जिनमें कर्म, श्रम और संकल्प की जगह भाग्य और ईश्वर ने ले लिया है। एक ओर खाता-पीता सम्पन्न वर्ग अपनी उपलब्धियों को ईश्वर की देन मान बैठा है तो दूसरी ओर कमज़ोर वर्ग अपनी हालत को अपनी नियति मान बैठता है और हमेशा शोषण का शिकार होता रहता है। संपन्न वर्ग इस स्थिति को बरकरार रखना ही चाहता है ताकि शोषण ज़ारी रखें। इस बात से यदि आम आदमी अवगत हो जाए तो परिवर्तन संभव है, लेकिन ईश्वर और भाग्य का संस्कार ही वह सत्ता है जिसके

---

1. अमरकांत, जन्मकुंडली, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 2, पृ. 112
2. वही, पृ. 105

सहारे परिवर्तन को रोका जा सकता है। भाग्य और ईश्वर के प्रवेश के साथ मेहनत और उसके परिणाम या काम और दाम अथवा योग्यता और अवसर का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता। 'डिप्टी कलक्टरी' का शकलदीप बाबू पहले उतना धार्मिक तो नहीं था। बेटा नारायण दो बार डिप्टी कलक्टरी की परीक्षा फेल हुआ। तीसरी बार शकलदीप बाबू कर्ज लेकर उसे परीक्षा में बिठाता है। इस बार उनका परिश्रम देखकर पति-पत्नी प्रसन्न थे। किंतु उसकी प्रतिभा का ज्ञान उसे होते हुए भी न था। वह अपनी पत्नी से कहता है - बडे-बडे बह गए, गदहा पूछे कितना पानी? फिर करम-करम की बात होती है। भई समझ लो, तुम्हारे करम में नौकरी लिखी ही नहीं। अरे हाँ, अगर सभी कुकुर काशी ही सेवेंगे तो हँडिया कौन चाटेगा? डिप्टी कलक्टरी, डिप्टी कलक्टरी! सच पूछो तो डिप्टी कलक्टरी नाम से मुझे घृणा हो गयी है।"[1] लेकिन इस बार नारायण पास हुआ। शकलदीप बाबू को कर्म से ज़्यादा भाग्य और ईश्वर पर भरोसा हो गया है। वह पुरानी बातों को याद करता है। वह अपने मित्र फैलाश बिहारी से कहता है - "लडकपन में हमने इसका नाम पन्नालाल रखा था, पर एक दिन एक महात्मा घूमते हुए हमारे घर आये। उन्होंने नारायण का हाथ देखा और बोले, इसका नाम पन्नालाल-सन्नालाल रखने की ज़रूरत नहीं, बस आज से इसे नारायण कहा करो, इसके कर्म में राजा होना लिखा है। पहले ज़माने की बात दूसरी थी, लेकिन आजकल राजा का अर्थ क्या है? डिप्टी कलक्टर तो एक अर्थ में राजा ही हुआ।"[2] मतलब, भाग्य पर शकलदीप बाबू का विश्वास इतना घना हो गया कि नारायण की कमियाँ भी उसे खूबियाँ लगने लगी।

---

1. अमरकांत, डिप्टी कलक्टरी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 88
2. वही, पृ. 104

'परमात्मा का प्रेमी' कहानी का नायक रामअवतार बाबू अत्यंत धार्मिक, दयालू एवं सहृदय व्यक्ति है। वह साल भर गंगा में स्नान करता है और नियमित रूप से रामायण और गीता का पाठ करता है। अपनी पत्नी के बीमार होने पर वह उसका हाल भगवान पर छोड देता है। उसे नींबू पानी देने का सलाह देता है। पत्नी के दर्द से चिल्लाने पर भी वह डॉक्टर को बुलाने के लिए तैयार नहीं हो जाता है। उसका लडका डॉक्टर को बुलाकर आता है। डॉक्टर ने एक खुराक दी, फीस ली और चला गया। रामावतार कहता है "यह ज़िंदगी भी क्या है। किसी का कोई ठिकाना नहीं। आज मैं यहाँ हूँ, कल नहीं भी रह सकता हूँ। दुनियाँ में रोज़ लाखों करोड़ों लोग मरते हैं। अब मरते हैं भाई तो मरते हैं किसी का क्या चारा है?"[1] इसलिए इलाज नहीं करवाता। वह कहता है कि वह पिल्ला, जिसको उसने रास्ते से उठाकर ले आया था, उसको भगवान ने बचाया था, बचा लिया। नहीं तो कुचलकर मर जाता। वैसे पत्नी को बचना था, डॉक्टर के दवा से बच गयी।

'ज़िंदगी और जोंक' में एक लड़का कथावाचक के पास आकर सूचना देता है कि रजुआ मर गया। वह रजुआ के गाँव चिट्ठी लिखने को भी कहता है। लेखक को बडा दुःख होता है कि रजुआ मर गया। लेकिन अचानक एक दिन कथावाचक के समक्ष रजुआ प्रत्यक्ष होता है, बोलता है कि 'मैं मरा नहीं हूँ, ज़िंदा हूँ'। कथावाचक के पूछने पर वह (रजुआ) बताता है कि उसके सिर पर एक कौआ बैठ गया था, कौवे का सिर पर बैठना अशुभ माना जाता है। उससे मौत आ जाती

---

1. अमरकांत, परमात्मा का प्रेमी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 2, पृ. 453

है। कथावाचक पूछता है कि चिट्ठी लिखने का मतलब क्या है तो रजुआ कहता है - "सरकार, यह मौअतवाली बात किसी सगे-संबन्धी के यहाँ लिख देने से मौअत टल जाती है।"[1] यह रजुआ का विश्वास था।

इस तरह के अनेक लोग समाज में। अमरकांत ने अपनी कहानियों के माध्यम से अपनी बदहाली को नियति मानकर ज़िंदगी बिताने वाले आम जनता की तस्वीर खींचने के साथ इसका फायदा उठानेवाले सम्पन्न वर्ग का भी चित्रण बखूबी किया है।

2.5.4 शोषण के विभिन्न आयाम

भारतीय समाज सामंतवादी पूँजीवादी मान्यताओं पर चलता आया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामंतवाद यानी सामंती व्यवस्था का वैधानिक अंत हो चुका है। किन्तु अब भी भारतीय समाज में सामंतीय मूल्य मौजूद है। सामंतवाद पूँजीवाद का रूप धारण करते हुए प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में समाज पर कार्यरत है। मतलब सामंती शिकंजा यहाँ अब भी मौजूद है पर उसके रूप बदले हैं। अमरकांत के शब्दों में - "भारत का पुराना ढाँचा इस अर्थ में परिवर्तित अवश्य हुआ है कि सामंतवाद के मज़बूत किले ढ़हा दिए गए हैं और उसका स्थान पूँजीवाद ले रहा है और उसने लगभग ले ही लिया है। बहुत से सामंत पूँजीपति बन गए हैं। पूँजीवाद के विकास के कारण ही धन का मूल्य स्थापित हो गया है, अब पूँजी ही प्रतिष्ठा और शक्ति को निर्धारित कर रही है। उसी के कारण मोल-तोल और

---

1. अमरकांत, ज़िंदगी और जोंक, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 86

बाज़ारू प्रवृत्ति बढी है, अवसरवाद और भ्रष्टाचार में वृद्धि हुई है, दलालों और ठेकेदारों की फौज खडी हो गई है और अमीर तथा गरीब की खाई चौडी हुई है।"[1] अमरकांत जी ने जिन बातों को यहाँ उठाया है, वह शत-प्रतिशत सही है। समाज में पूँजी की प्रतिष्ठा से उच्च-नीच, अमीर-गरीब का भेदभाव बढ़ता गया। जो समाज में हाशिएकृत वर्ग की सृष्टि का कारण बना। यह वर्ग हमेशा शोषण का शिकार बनता रहा। अमरकांत ने अपनी कहानियों के माध्यम से ऐसे लोगों को वाणी देने की कोशिश की है जो हमेशा, शोषित पीडित हो और जिनकी ज़िंदगी हाशिए पर हो।

2.5.4.1 नौकरों और भिखमंगों पर अत्याचार एवं शोषण

अमरकांत ने नौकरों के ऊपर मालिकों का निर्दय व्यवहार और उसके शोषण की दर्दनाक अभिव्यक्ति अपनी कहानियों में की है। 'दो चरित्र' नामक कहानी का लडका भिखमंगा था। कहानी में कोआपरेटिव इन्स्पेक्टर जनार्दन के दरवाज़े पर भीख माँगने के लिए वह आता है। जनार्दन ने अपने दोस्त कन्हाई के साथ इन भिखमंगों को लेकर अपने मन के विचारों को अभी-अभी पेश किया ही था। जनार्दन का विचार है कि "भिक्षावृत्ति इसलिए बढी है कि हम - आप भीख दे देते हैं। अगर हम-आप दे ही नहीं तो किसी साले की माँगने की हिम्मत पडेगी? हार कर सबको कुछ-न-कुछ करना ही पडेगा। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि जो लोग भीख देते हैं, वे देश के सबसे बडे दुश्मन हैं।"[2] इस प्रकार की बातचीत के बीच

---

1. रवीन्द्र कालिया, अमरकांत एक मूल्यांकन, पृ. 119
2. अमरकांत, दो चरित्र, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 111

ही वह लडका आता है और भीख माँगता है। अपनी बातों की पुष्टि करने हेतु वह उससे पूछता है कि नौकरी क्यों करते हो? तो वह कहता है कि नौकरी मिलती ही नहीं। जनार्दन फिर पूछता है कि क्या काम करेगा? लडके के चुप रहने पर जनार्दन कहता है - "अरे मैं इनकी नस-नस पहचानता हूँ। काम के नाम पर ही तो इनकी नानी मरती है। यह शुरू से अखिर तक झूठ बोलता है। यह पास के किसी गाँव-देहात का रहनेवाला है और इन सबों ने माँगना-मूँगना अपना पेशा बना लिया है। माँ कहीं माँगती है, बाप कहीं माँगता है, यह लड़का कहीं। अब क्या चाहिए साहब? भरे जाओ घर को।"[1] लेकिन लड़का काम करने के लिए तैयार हो जाता है और जनार्दन उसे दम-तोड मेहनत कराता है। वह इस तरह उसके साथ व्यवहार करता है कि वह कोई यंत्र हो। वह उससे वह नाली तक साफ कराता है जिसका पानी न बहता था और वह बरसों से इकट्ठे होकर काला - बदबूदार हो गया था। जनार्दन की उम्मीद थी कि लड़का इनकार कर देगा क्योंकि वह कार्य उतना घृणित था और नाले में डोम-मेहतर ही हाथ लगाते थे। लड़के ने प्रस्ताव का ज़रा भी विरोध नहीं किया बल्कि वह बहुत ही लगन के साथ काम करने लगा। इतना करने पर भी जनार्दन की मानसिकता कुछ इस प्रकार थी - "साला पूरा कामचोर है। मैंने तो पहले ही कह दिया था। भला, उसकी काम में तबीयत लग सकती है?"[2] सारा काम करवाने के बाद जनार्दन उसे डॉटकर वहाँ से भगा देता है। यहाँ जनार्दन उस संकुचित मानसिकता वाले स्वार्थ व्यक्तित्व का प्रतीक है जो ऐसे गरीब लोगों की मजबूरी का पूरा फायदा उठाते हैं।

---

1. अमरकांत, दो चरित्र, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 112
2. वही, पृ. 114

'नौकर' कहानी का 'जंतु' भी इस प्रकार प्रताडना झेलनेवाला पात्र है। लगता है नौकर के लिए 'जंतु' नाम अमरकांत ने सोच-समझकर रखा है। उस घर के लोग जो अपने को बहुत बडे खानदान के समझते है और नौकर के साथ ऐसा व्यवहार करता है कि वह सचमुच कोई जानवर हैं। 'जंतु' वकील साहब के भारी भरकम कुनबे की सेवा करता है, सबकी गलियाँ सुनता है, पानी भरता है, साफ करता है, बच्चों को घुमाता है मतलब जानवर की तरह काम करता है। सबसे बडी बात तो यह है कि जब वह बीमार पड जाता है तो घर में कोई भी उसकी ओर ध्यान ही नहीं देता। उन लोगों की मानसिकता कुछ इस प्रकार थी-

> "शुरू से ही कामचोर है। नखरे फैला रहा है।
> ऐसा-वैसा दिन भी तो नहीं कि बुखार हो जाय।
> हरारत है, ठंडे पानी से नहा ले, सब ठीक हो जाएगा।"[1]

यह सामान्य बात है कि बीमारी के बाद कमज़ोरी आ जाती है। पहले की तरह काम करना मुश्किल हो जाता है। जंतु भी बीमारी के बाद थका-थका महसूस करता है, फिर भी वह काम करने के लिए मजबूर बन जाता है। इस डर से कि नहीं तो नौकरी चली जाएगी।

'बहादुर' कहानी का बहादुर तो बच्चा है। शरारती होने के कारण अपनी विधवा माँ से मार खाना पड़ा। वह घर से भाग निकला। वह कथावाचक के घर आ पहुँचा। कथावाचक के घर में नौकर की समस्या और लालसा पहले से ही थी।

---

1. अमरकांत, नौकर, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 49

कथावाचक की पत्नी निर्मला भी नौकर के लिए व्याकुल थी। जब बहादुर मिल गया तो उनकी खुशी का ठिकाना ही नहीं था। बहादुर बहुत ही मेहनती था। लगन से काम करता था। बहादुर को लगा कि उनको अपने घर में जो लाड-प्यार नहीं मिला वह यहाँ मिल जाएगा। लेकिन कुछ दिन बाद कथावाचक का लड़का बहादुर को तंग करने लगा। उसे मारने लगा और गालियाँ देने लगी। निर्मला भी उसके साथ भिन्न तरीके से बर्ताव करने लगी। वह उससे अपनी रोटी खुद सेंकने के लिए कहती है - "चल चुपचाप बना अपनी रोटियाँ। तू सोचता है कि मैं तुझे पतली-पतली नरम-नरम रोटियाँ सेंककर खिलाऊँगी? तू कोई घर का लड़का है? नौकर चाकर तो अपना बनाकर खाते ही रहते हैं। ....समझ जा रोटियाँ नहीं सेंकेगा तो भूख रहेगा?"[1] घर में आये रिश्तेदार इतना कंजूस था कि वे लोग घर के बच्चों के लिए कुछ नहीं लाए। इतना नहीं वह झूठ बोलती हैं कि मिठाई लेने के लिए जो पैसा लाया था, वह गायब है। बहादुर पर इल्जाम लगा देती है कि पैसे उसने चुराया है। जब कथावाचक कहता है कि वह ऐसा लडका नहीं तो रिश्तेदार कहती है - "यू डू नॉट नो, दीज़ पीपुल आर एक्स्पर्ट इन दिन आर्ट।"[2] घर के लोग यह जानकर भी कि बहादुर बेकसूर है उसको डाँटते हैं, फटकारते हैं। तंग आकर वह भाग जाता है। इस अवसर पर निर्मला का कथन है - "कोई भी सामान नहीं ले गया है। उसके कपडे, उसका बिस्तरा, उसके जूते-सभी छोड़ गया है। पता नहीं उसने हमें क्या समझा? अगर वह कहता तो मैं उसे रोकती थोडे? बल्कि उसको खूब अच्छी तरह

---

1. अमरकांत, बहादुर, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 272
2. वही, पृ. 273

पहना ओढ़ाकर भेजती, हाथ में उसकी तनख्वाह के रुपये रख देती। दो-चार रुपये और अधिक दे देती। पर वह तो कुछ ले ही नहीं गया...."[1] यह निश्चय ही कोई हृदय परिवर्तन नहीं है, न ही उसकी नैतिकता। उन्हें खल रहा है कि इतना कर्मठ, ईमान्दार और सहनशील नौकर कहाँ मिलेगा। इन तीनों कहानियों के पात्रों को इसलिए गुलामी की ज़िंदगी भोगनी पडती है कि वे लोग इसके लिए मजबूर है।

2.5.4.2 जाति या वर्ण के नाम पर शोषण

जाति या वर्ण के नाम पर हमारे समाज में सदियों से शोषण होता रहता है। इस वर्गभेद ने ही हमारे समाज की जडों को खोखला करके रख दिया है। भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था का प्रारंभ युगीन परिस्थितियों के माध्यम से हुआ। प्रारंभ में समाज में काफी अव्यवस्था रही होगी। इस अव्यवस्था को समाप्त करने हेतु समाज में लोगों के कार्यों को बाँट दिया गया। मनुस्मृति में लिखा गया है-

"तस्य कर्म विवेकार्य शोषणामनुपूर्वशः
स्वयंभूवो मनुर्धोमानिदं शास्त्रमकल्पयत्।"[2]

अर्थात् उसके और अन्य वर्णों के कर्मों का ज्ञान करने के निमित्त ही मेधावान् स्वायंभुव मनु ने इस शास्त्र की रचना की। अर्थात् वर्णव्यवस्था मनु द्वारा वर्गीकृत व्यवस्था है। उन्होंने समाज को ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय एवं शूद्र आदि चार वर्णों में विभाजित किया है। प्रारंभ में इसका विभाजन कर्मों के आधार पर हुआ था

---

1. अमरकांत, बहादुर, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 275
2. मनुस्मृति, पृ. 26

परंतु धीरे-धीरे कर्म का स्थान जन्म ने ले लिया। इसके बाद जो जिस वर्ण में पैदा होता था उसकी वही जाति मानी गई। "जीवन मूल्यों में परिवर्तन आ जाने से वर्ण व्यवस्था विकृत हो गई। मनुष्य के जीवन में दया, करुणा, नम्रता, अहिंसा, शान्ति, क्षमा, उदारता, संकल्प, बचन, कर्म के विराट एवं उदात्त मूल्य लुप्त हो गये। इसका प्रभाव यह हुआ कि मज़दूर और मशीन, किसान और खेत, लोहा और लुहार, अध्यापक और शिक्षा का संबन्ध व्यावसायिक हो गया।"[1] सामाजिक परिवर्तन के साथ लोगों की मानसिकता में भी परिवर्तन आया। मानसिकता संकुचित होती गई। उच्चवर्ग के मन में निचले तबले के लोगों के प्रति गुलामी मानसिकता पैदा होती गई। ये लोग शारीरिक और मानसिक रूप से उच्चवर्ग के परिहास के पात्र बने और शोषण के शिकार होते रहे।

अमरकांत की कहानियों में ऐसे अनेक पात्र है जिन्हें निम्न जाति में पैदा होने के कारण गुलामी का सज़ा भुगतना पडा। 'दो चरित्र' कहानी का लड़का, 'ज़िंदगी और ज़ोक' का रजुआ, 'बहादुर' का बहादुर, 'नौकर' का जंतु आदि पात्र इसके लिए उदाहरण हैं।

नौकर कहानी का जंतु जब बीमार पड जाता है तब भी घर के लोगों के मन में उसके प्रति कोई दया जागती नहीं है। वह उस पर ऐसा व्यवहार करता है जैसा कि वह कोई जानवर हो। जानवर भी नहीं कोई यंत्र हो। घर में पालनेवाले जानवर को अगर कोई बीमारी आ जाए तो लोग दवा-दारू तो अवश्य पिलाएँगे।

---

1. डॉ. ज्ञानचंद शर्मा, आधुनिक हिन्दी कहानी में वर्णित सामाजिक यथार्थ, पृ. 95

जंतु के बीमार पडने पर वे लोग कहते हैं - "दवा-दारू की ज़रूरत ही क्या है! छोटी जाति के लोग तो हवा-पानी से ठीक हो जाते हैं।"[1] ऐसे लोग तो जाति के आधार पर लोगों की हैसियत निर्धारित करते हैं।

घर में कोई चोरी-डकैती आ जाए तो अपराध सीदा नौकर के ऊपर ही पड़ता है। ऐसी मानसिकता को अमरकांत ने 'दो चरित्र', 'ज़िंदगी और जोंक', 'बहादुर' आदि कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया है। 'दो चरित्र' का लड़का पूरे लगन के साथ काम करता है। उसकी लगन और मेहनत देखकर कन्हाई लड़के की तारीफ करता है कि लड़का बहुत मेहनती है और शक्ल सूरत से तो सीधा ही लगता है तो जनार्दन कहता है - "भाई सीधी गाय ही खेत चरती है। ....मैं तो बैठा-बैठा सब देख रहा हूँ न! साला एकदम चोर मालूम पड़ता है। बार-बार सिर उचका कर घर के भीतर देखता है। साले ने अपने घर का अता-पता भी तो नहीं बताया। जाति-वाति का भी कोई ठिकाना नहीं। ऐसों का क्या विश्वास? अगर रात को गहना-वहना या कोई और चीज़ चुराकर चलता बना तो कहाँ ढूँढते फिरेंगे?"[2] 'ज़िंदगी और जोंक' का रजुआ जिन्हें सारे मोहल्ले के लोग अपना गुलाम समझते थे, दिल लगाकर मोहल्ले के लोगों का काम कर रहा था। जब शिवनाथ बाबू के घर से साडी की चोरी हुई तो इल्ज़ाम रजुआ पर पडता है और शिवनाथ बाबू उसे डाँटता है, फटकारता है और उसे मारता है। लेकिन जिस साडी की चोरी का इल्ज़ाम रजुआ पर लगाया गया वह साडी जब घर में ही मिल गई तो शिवनाथ बाबू

---

1. अमरकांत, नौकर, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 50
2. अमरकांत, दो चरित्र, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 114

कहता है - "इस बार तो साडी घर में ही मिल गयी है, पर कोई बात नहीं चमार-सियार तो डांट डपट पाते ही रहते हैं। अरे इस घर क्या पडी है, चोर-चाई तो रात-रात भर मार खाते हैं और कुछ भी नहीं बताते। "....चलिए साहब नीच और नींबू को दबाने से ही रस निकलता है।"[1] 'बहादुर' कहानी में बहादुर भी इस प्रकार के शोषण का शिकार है। उस पर चोरी का आरोप लगाता है और उसे पुलीस के हवाले करने की बात करता है। नौकर की समस्या घर में बनी रहती थी इसलिए घर के लोग किसी भी प्रकार उसको घर में रखना चाहती थी। निर्मला दूसरे लोगों के सामने यह दिखाना चाहती थी कि वह घर के नौकर को भी बहुत इज्ज़त करती है। वह दूसरों से कहती भी थी कि वह बहादुर को नौकर नहीं बल्कि अपना बच्चा मानती है। लेकिन निर्मला का व्यवहार इस प्रकार था - "निर्मला ने उसको एक फटी-पुरानी दरी दे दी थी। घर से वह एक चादर भी ले आया था। रात को काम-धाम करने के बाद वह भीतर के बरामदे में एक टूटी हुई बँसखट पर अपना बिस्तर बिछाया था।"[2] निर्मला का बच्चा किशोर उसे गालियाँ भी देता था - "मेरा काम सबसे पहले होना चाहिए। अगर एक काम भी छूटा तो मारते-मारते हुलिया टाइट कर दूँगा। साला, कामचोर, करता क्या है तू, बैठे-बैठे खाता है।"[3] घर के लोगों के इस व्यवहार से तंग आकर वह घर से भाग जाता है।

इस प्रकार जाति या वर्ण के नाम पर होनेवाले भेदभाव का फल भुगतनेवाले अनेक लोग हैं जो इसके लिए अभिशप्त बन गए हैं क्योंकि इनका जन्म निम्न जाति

---

1. अमरकांत, ज़िंदगी और जोंक, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 71
2. अमरकांत, बहादुर, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 269
3. वही, पृ. 271

में हुआ। जब तक ये जातिभेद की भावना लोगों के मन से दूर न जाएगी, जब तक इस संकुचित मानसिकता में बदलाव न आ जाएगी, तब तक यह समस्या समाज में बनी रहेगी।

आज भी ऐसे अनेक लोग समाज में मौजूद है, जिन्हें मजबूरीवश उच्चवर्ग के लोगों के तलवे सहलाने पडते हैं और उनकी क्रूरता के पात्र बनने पड़ते हैं। आजकल अखबार में ऐसी अनेक खबरें छपकर आती है, जो इस बात की पुष्टि करती हैं। हाल ही में अखबार में एक लड़की की खबर आयी थी, जिसे घर की मालकिन ने मार-पीटकर कुत्ता घर में डाल दिया था। ऐसे संदर्भ में ये लोग अपना प्रतिरोध कैसे जाहिर करेंगे? एक जून की रोट्टी के लिए ही ये लोग इस प्रकार के काम के लिए बडे लोगों के पास आते हैं। लेकिन उन्हें मिलता है ज़िंदगी भर मार। ऐसे संदर्भ में वे यही कर सकते हैं कि वहाँ से भाग जाय, जैसे अमरकांत के पात्रों ने किया है।

2.5.4.3 स्त्री शोषण

स्त्री सदियों से जाने-अनजाने ही शोषण की शिकार है। पुराने ज़माने से लेकर पुरुष सत्तात्मक समाज ने स्त्री के लिए कुछ नियम-कानून बनाए हैं, जिसके अनुसार जीनेवाली नारी को आदर्श नारी की संज्ञा दी गई। मतलब पुरुष की आज्ञा का पालन करते हुए चुपचाप घर संभालकर जीनेवाली नारी को आदर्शनारी की संज्ञा प्राप्त हुई। वहाँ नारी मन की आशा-आकांक्षाएँ दबी पडी थी। अपने मन की इच्छाओं को प्रकट करने में नारी असमर्थ थी। जो अपनी इच्छा के अनुसार जीने

का आग्रह प्रकट करती थी अर्थात् जो अपनी मर्जी के अनुसार जीने का साहस दिखाती थी उसे कुलटा की संज्ञा से अभिहित किया गया। लेकिन आधुनिक काल में नारी की स्थिति मजबूत हो गई है। उसने अपने आपको सामाजिक दृष्टि से काफी सुदृढ़ कर लिया है। आज नारी ने उच्चशिक्षा प्राप्त कर ली है। अपने ऊपर उठ रहे अत्याचारों के प्रति आवाज़ उठाने की हिम्मत और साहस आज उसमें है। अब तक के बने-बनाए ढाँचे से बाहर निकलकर स्वतंत्र जीवन बिताने के लिए आज वह एक हद तक काबिल है। अमरकांत ने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन के विभिन्न पक्षों को उजागर करने की कोशिश की है। उनकी कहानियों में एक ओर परिवार के लिए समर्पित, पतिपरायण नारी का मतलब, नारी के आदर्श रूप का चित्रण हुआ है तो दूसरी ओर अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत नारी प्रकृति का अंकन हुआ है। अपने ऊपर होनेवाले शोषण के प्रति सजग और उसके प्रति विद्रोह प्रकट करनेवाली नारी भी उसमें विद्यमान है।

2.5.4.3.1 स्त्री का सर्वंसहा रूप (आदर्श नारी)

अमरकांत जी की कहानी 'दोपहर का भोजन' में सिद्देश्वरी के द्वारा नारी के सहनशील चरित्र की अभिव्यक्ति की गई है। सिद्देश्वरी परिवार के प्रति समर्पित पति-परायण नारी है। कठिन आर्थिक तंगी और गरीबी से गुज़रने पर भी परिवार के प्रति अपने दायित्व से वह विमुख नहीं रहती। अपने परिवार को किसी भी मायने टूटने नहीं देती। परिवार में पिता और बच्चों के बीच के संबन्ध में कोई आंच नहीं आने देती। संबन्धों को मजबूत बनाने केलिए वह कोशिश करती ही

रहती है। पति और बच्चों से बातचीत करते संदर्भ में वह प्रत्येक व्यक्ति का तारीफ करते हुए झूठ बोलती रहती है ताकि उन लोगों के बीच का रिश्ता ज़्यादा मजबूत बनें। रामचंद के यह पूछने पर कि इतनी कडी धूप में मोहन कहाँ गया है तो सिद्देश्वरी को इसका पता ही नहीं था कि वह कहाँ है। वह झूठ बोलती है - "किसी लड़के के यहाँ पढ़ने गया है, आता ही होगा। दिमाग उसका बडा तेज़ है और तबीयत चौबीसों घंटे पढ़ने में ही लगती है, हमेशा उसी की बात करता रहता है।"[1] जब रामचंद छोटे बेटे के संबन्ध में पूछता है तो वह कहती है कि "आज तो सचमुच नहीं रोया। वह बडा ही होशियार हो गया है। कहता था, बडका भैया के यहाँ जाऊँगा।"[2] मुंशिजी आकर जब बडके बेटे के संबन्ध में पूछता है तो उसका जवाब कुछ इस प्रकार था - "अभी-अभी खाकर काम पर गया है। कह रहा था कुछ दिनों में नौकरी लग जाएगी। हमेशा 'बाबूजी, बाबूजी किये रहता है। बोला-बाबूजी देवता के समान है।"[3] इस प्रकार अपने परिवार के बीच आपसी संबन्ध को बनाए रखने के लिए वह सख्त कोशिश करती रहती है। "सिद्धेश्वरी के गढ़-गढ़कर कहे हुए उक्त झूठे वाक्यों से स्पष्ट है कि वह भाई-भाई और पिता पुत्र में स्नेह संबन्ध बनाये रखने का आदर्श प्रयत्न करती हैं; जैसे वह समझती है कि स्नेह में बडा बल होता है और उसके सहारे बडे से बडा संकट आसानी से झेला जा सकता है।"[4] अपनी पेट की चिंता किए बगैर वह दूसरों को पेट भर खिलाने के लिए तरसती रहती है। इस

---

1. अमरकांत, दोपहर का भोजन, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 63
2. वही, पृ. 64
3. वही
4. रसवंती, 1976 जनवरी, अंक 1 - पृ. 51

प्रकार परिवार के लिए समर्पित, पतिपरायण नारी के सर्वंसहा रूप को अमरकांत ने सिद्धेश्वरी के माध्यम से बखूबी उकेरा है।

2.5.4.3.2 स्त्री द्वारा स्त्री का शोषण

जैसा कि पहले कहा जा चुका है स्त्री सदियों से शोषण की शिकार है। इस पुरुष वर्चस्ववादी पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष द्वारा स्त्री को कई प्रकार से शोषण झेलना पडा। लेकिन स्त्री शोषण के एक और पहलू भी अमरकांत की कहानियों में दृष्टव्य है। वह है स्त्री द्वारा स्त्री का शोषण। कहा जाता है कि स्त्री ही स्त्री की पहली शत्रु है। अमरकांत ने अपनी कहानियों के माध्यम से पुरुष द्वारा स्त्री पर होनेवाले अत्याचार एवं शोषण के साथ-साथ स्त्री द्वारा स्त्री पर होनेवाले अन्याय की ओर भी इशारा किया है।

स्त्री को पुरुष के हाथों का ही नहीं कभी-कभी स्त्री के ही हाथों का खिलौना बनना पडता है। कभी-कभी अपने ससुराल में साँस के द्वारा बहू को, बहू द्वारा साँस को, कभी माँ से बेटी को, बेटी से माँ को, जो भी हो समाज में स्त्री को शोषण का शिकार होना पड़ता है। आजकल सोशियल मीडिया में आनेवाली स्त्री संबन्धी समाचार या दुर्घटनाओं की ओर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि उन सब घटनाओं के पीछे एक स्त्री का हाथ ज़रूर होगा। इसी कारण से समाज में ऐसा एक मत भी प्रचलित है कि स्त्री का सबसे बडा दुश्मन स्त्री ही है।

अमरकांत मध्यवर्गीय ज़िंदगी के चितेरे हैं। अतः उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय परिवार की स्त्रियों में उत्पन्न आपसी झगडे, स्वार्थी एवं लालसी मानसिकता

के कारण एक दूसरे का शोषण आदि का ब्यौरा मिलता है। उन्होंने 'सुख और दुख का साथ', 'मरुस्थल में' आदि कहानियों के माध्यम से इन समस्याओं को दर्ज करने की कोशिश की है।

'सुख और दुःख का साथ' दो सहेलियों के बीच की कहानी है जो पडोस में रहती हैं। दोनों के बीच आठ सालों की दोस्ती थी। मोहल्ले की बाकी औरतों को उन लोगों की दोस्ती से जलन था। विमल की माँ आठ साल पहले उस मोहल्ले में आयी थी। तब से बबली की माँ के साथ उनका अच्छा रिश्ता था। विमल की माँ अच्छी तरह से लोगों से व्यवहार करती थी। उसकी इस आदत्त से ही दोनों का रिश्ता मज़बूत हुआ था। दोनों के बीच की दोस्ती को अमरकांत ने कहानी में यो व्यक्त किया है - "रविवार हो या किसी अन्य छुट्टी के दिन बबली के पिताजी दोपहर के भोजन के बाद ही सबको सिनेमा दिखाने या कहीं घुमाने के लिए ले जाते थे। वे शाम को लौटकर विमल की माँ के घर बैठ जाते और उठने का नाम ही न लेते। विमल की माँ उनको नाश्ता तो कराती ही थी, साथ में अपनी सहेली के थके हुए शरीर को आराम देने के लिए उन सबका भोजन भी बना देती। आरम्भ में जो बात शिष्टाचार के रूप में आरम्भ हुई थी। वह आगे चलकर दोस्ती का अधिकार समझ गयी।"[1] बबली की माँ हमेशा विमल की माँ की तारीफ करती रही और अवसर मिलने पर उनके यहाँ सपरिवार जाकर मज़ा लेने लगी। विमल की माँ ने भी यह सोचा कि ज़रूरत पडने पर बबली की माँ भी ऐसा ही व्यवहार करेगी जो

---

1. अमरकांत, सुख और दुख का साथ, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 2, पृ. 440

आज वह करती है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। सालों बाद विमल की माँ ने चारपाई पकड ली। उसको कैंसर था। विमल की माँ ने यह आशा की थी कि बबली की माँ उसकी सहायता के लिए आ जाएगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। बबली की माँ दो-तीन बार प्रारंभ में घर आयी थी, बाद में वह आना ही बंद कर दिया। कुछ दिन बाद मुन्ना विमल की माँ के घर आने लगा क्योंकि विमल की माँ उसको चूरन खरीदने के लिए पैसा देती थी। जब विमल की माँ उससे पूछती है कि तुम इतने दिन क्यों नहीं आता तो मुन्ना कहता है - "मम्मी कहती हैं, तुम जल्दी ही मर जाओगी।"[1] विमल की माँ को यह सुनकर बहुत दुःख हुआ कि अपनी सहेली ने ऐसा कहा। बात इस प्रकार चलती रही। अचानक एक दिन बबली की माँ विमल की माँ के घर आयी। कभी मिर्च लेने के लिए तो कभी घी लेने के लिए। जब-जब चीज़ों की ज़रूरत पडती थी, वह आया करती थी। लेकिन विमल की माँ को जब उसके सहारे की ज़रूरत थी, तब उसके लिए बबली की माँ तैयार नहीं थी। अंत में तडप-तडप कर विमल की माँ की मृत्यु हो जाती है। तब बबली की माँ दूसरों को दिखाने के लिए चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगती है।

'मरुस्थल में' कहानी का ब्रज और रजनी भी इसी मानसिकता वाले लोग है। जब वह मोहल्ले में जी रहे थे, तब उसकी सहायता के लिए मालती आया करती थी। रजनी की बीमारी में वह उसकी बहुत मदद करती थी। लेकिन रजनी की मानसिकता कुछ अलग थी। जब उसकी बीमारी ठीक हो गई तो उसका रंग बदल गया। वह कहती है - "क्या यह भैया-भैया लगाए रहती है। न अपनी जाति,

---

1. अमरकांत, सुख और दुख का साथ, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 2, पृ. 445

न रिश्तेदार। मैं तो ऐसे लोगों को मूँह नहीं लगाती।"[1] जब रजनी गर्भवती हो जाती है, तब उसी मालती की सहायता माँगने के लिए पति को भिजवाती है, जिसकी उसने बेइजदी की थी। 'मूस' कहानी की परबतिया भी ऐसी स्त्री है जो मुनरी का पूरी तरह शोषण करती है और उसका पूरा का पूरा फायदा उठाती है।

इस प्रकार स्त्री जाति की स्वार्थी, लालसी रूप का चित्रण अमरकांत ने किया है, जो ज़रूरत आने पर दूसरी स्त्रियों का खून चूसती है और बाद में उसको बाहर फेंक देती है।

2.5.4.3.3 पुरुष द्वारा स्त्री का शोषण

समाज के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में, आज जहाँ-जहाँ स्त्री का सानिध्य है, वहाँ स्त्री को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता है। समाज के साथ पुरुष की तुलना में स्त्री का संबन्ध अधिक गहरा है। पुरुष हमेशा व्यस्त रहता है। सीमोन द बोउवर के विचार में "समाज के साथ पत्नी का संबन्ध अधिक निकट होता है। पति की व्यापारिक व्यस्तता उसे सामाजिक समूह से दूर रखती है किंतु इस तरह की कोई व्यस्तता न होने के कारण पत्नी अपने बराबरवालों के समाज के ही भीतर रहती है।"[2] पहले स्त्री का व्यवहार क्षेत्र घर की चारदीवारी के भीतर सीमित था। तब उन्हें अपने घर में अपने ही पति, पिता और भाई द्वारा और कभी अपनी अशिक्षा और अज्ञानवश या तो फिर मजबूरीवश बाहर से भी अनेक

---

1. अमरकांत, मरुस्थल, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 2, पृ. 430
2. सीमोन द बोउवर, स्त्री उपेक्षिता (अनु. प्रभा खेतान), पृ. 255

समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। लेकिन आज नारी शिक्षित है। अपने घर की चारदीवारी से वह बाहर निकलने लगी है। लेकिन समाज के जिन-जिन क्षेत्रों में उसने अपना पद रखा वहाँ उसे शोषण का शिकार होना पड़ा। पहले तो उसने सब कुछ सहन कर लिया। कारण वह अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं थी। बाद में उसने समझ लिया कि स्त्री और पुरुष दोनों का समाज में समान अधिकार है। वह अपने ऊपर होनेवाले अन्यायों के प्रति आवाज़ उठाने लगी। अमरकांत ने अपनी कहानियों में एक ओर शोषण को झेलनेवाली अशिक्षित नारी का चित्रण किया है तो दूसरी और शोषण के प्रति प्रतिरोध करनेवाली सुशिक्षित नारी को प्रस्तुत किया है।

अमरकांत की कहानी 'लाखो' की पात्र लाखो अशिक्षित नारी है। लाखो से कथावाचक की मुलाकात गंगा नदी के किनारे लगे मेल में होती है। वह नदी के किनारे बैठकर रो रही थी। पूछने पर पता चला कि घर के लोगों से उसे धोखा हुआ है। वे लोग उसे यहाँ छोडकर चले गए हैं। एक औरत के पूछने पर वह बताती है - "क्या करूँ ए मैया,..... हमारे साथ बडा धोखा हुआ है, वे लोग मुझे नैया से नहलाने के बहाने ले आए। हमारे साथ देवर, हमारे आदमी, हमारी जेठानी भी थीं। पहले मुझे गंगा में नहलाया, फिर बोले, तुम यहीं बैठो, हम लोग भी नहाकर आते हैं। तबी से हम बैठे हैं...."[1] उन लोगों को किसी भी प्रकार अपने कंधे का बोझ उतारना था, इसलिए लाखो को वहाँ छोडकर चले गए।

---

1. अमरकांत, लाखो, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 2, पृ. 165

लाखो के ऊपर हुए शोषण का सिलसिला यहाँ समाप्त नहीं होता, बल्कि ज़ारी रहता है। कथावाचक गाँव के प्राइमरी स्कूल का हेडमास्टर है। वह उस औरत की खूब मदद करता है। गाँव की चुन्नीलाल नामक व्यक्ति के साथ उसकी शादी करवाता है। शादी के बाद बच्चा न होने के कारण लाखों को चुन्नीलाल से बहुत कुछ सहना पडा। चुन्नीलाल की मृत्यु के बाद उसका भतीजा धोखा देकर उसका खेत हडपता है। लाखो फिर से अनाथ बन जाती है। अंत में उसकी मृत्यु हो जाती है कथावाचक का कथन है - "मेरी शंका सच साबित हुई। वह और कोई नहीं बल्कि लाखों ही थी। खेत उसी का था और वह उस खेत की मिट्टी से पुती हुई थी जैसे उसने लोट-लोटकर उस खेत में स्नान किया हो।"[1] इस प्रकार 'लाखो' जीवन भर सहती रही और उसका अंत भी हुआ। अपने परिवारवालों से, पति से और भतीजा से उनको बहुत कुछ सहना पडा।

'पलाश के फूल' कहानी का रायसाहब अपने पिताजी के स्वर्गावास के बाद बिहार के तराई के इलाके की अपनी ज़मीन-जायदाद संभालने के लिए चला जाता है। वही पर उसकी मुलाकात पंद्रह-सोलह वर्ष की लडकी से हो जाती है जिसका नाम है - अंजोरिया। उपलों के अंगारों के समान उसमें दमक थी। अंजोरिया के बारे में लेखक का कथन है - "कहीं खोट नहीं। भरी-पूरी कुदरत ने जैसे पीठ और कमर पर रखकर उसके शरीर को पहले तोडा, ऐंठा और ताना, फिर किसी जादू के बल से बडा और जवान कर दिया था। बडी-बडी रसीली आँखें,

---

1. अमरकांत, लाखो, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 2, पृ. 173

छोटा मुँह बडा भोलापन था उसमें।"[1] रायसाहब को पता चला कि वह असामी भुलई की ही लड़की है। उसने एक चाल चलाई। भुलाई को पहले पिटवा दिया, बाद में सहानुभूति का टोकरा लिए इलाज के लिए पैसे दिए और अंजोरिया को उसके घर चारा काटने भेजने के लिए कहा।

अंजोरिया बडी भोली लडकी थी। रायसाहब तो उसके बाप के प्रति सहानुभूति जताता रहा। भटक खुलने के लिए थोडी देर लग गयी। लू के कारण जब उसने दरवाजा बंद किया तो वह रोने लगी। उसने बयालीस वर्ष की उम्र में भी वह हरकत की जो जवान भी नहीं कर सकता। रायसाहब कहता है - "मेरे शरीर में अजीब झनझनाहट और सनसनाहट हो रही थी, मैं बेकाबू होने लगा। मैंने उसको बहुत पुचकारा और समझाया। कसमें खायी कि मेरा प्रेम सच्चा है और उसके लिए ज़मीन-जायदाद, जान, सब कुछ कुरबान कर सकता हूँ। आखिर में इतना उतावला हो गया कि नीचे झुककर उसके पैर पकड लिये।"[2] यही आदमी जब अंजोरिया के यह कहने पर कि मुझे रखैल के रूप में रख लो, बदल जाता है। कहने लगता है कि वह औरत नहीं शैतान है जो इज्जत, जमीन-जायदाद, बाल-बच्चे, सब कुछ छीनकर उसे बरबाद करना चाहता है। रायसाहब कहता है - "उसने पहले अपने रूप के जादू से मुझे वश में किया, फिर अपना प्यार जताकर मुझे उल्लू बनाती रही, मेरा रुपया-पैसा बरबाद करती रही। माया का असली रूप यही देख सकते हो। तो मैं ज्यों-ज्यों सोचता गया, मुझमें उस औरत के लिए नफरत-सी भरती

---

1. अमरकांत, पलाश के फूल, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 118
2. वही, पृ. 119

गयी।"[1] वह आदमी जिसने किसी समय उसके पैरों को चूमता था, अपने प्रेम की सच्चाई की दुहाई देता था, कपडे, मिठाइयाँ, रुपये-पैसे न मांगने पर देता था, मौज-मस्ती लूटने पर उसे फाहशा कहा। अंत में वह तो ऐसा भगोडा निकला कि बेचारी को अकेले छोडकर भाग आया। दुबारा लौटकर गया भी नहीं। 'मछुआ' कहानी का अनिलेश जो अपनी पत्नी को गाँव छोडकर दूसरे स्त्रियों को पठाता रहता है। वह कहता है - "जाल डालने के लिए बुद्धि और अनुभव की आवश्यकता होती है, बुरे काम के लिए कोई भी स्त्री बुरी नहीं होती और परिश्रम वहीं करना चाहिए जहाँ सफलता की आशा हो।"[2] इसीलिए वह गरीब या मर्दशून्य कुटुम्बों, कमज़ोर पतियों की बीवियों तथा घरेलू अन्यायों से असंतुष्ट युवतियों को ध्यान में रखकर अपनी योजनाएँ बनाता था। तो ऐसी है मर्दों की मानसिकता। स्त्री की मजबूरी का फायदा उठाकर ये मर्द अपना काम चलाते हैं। अज्ञान एवं मजबूरी वश बेचारी स्त्रियाँ इन लोगों की चाल में जल्दी फंस जाती है और सबकुछ चुपचाप सहन कर लेती हैं।

अमरकांत की कहानी 'विजेता' कुछ अलग किस्म की कहानी है। पुरुष का पुरुष पर प्रतिहिंसा का भाव और उसका शिकार बनती है बेचारी स्त्री। इस पुरुष वर्चस्ववादी, पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष के मन में ऐसी चिंता बनी रहती है कि स्त्री उसके हाथों का खिलौना है। वह उसके साथ कुछ भी कर सकता है। अपने मन की इच्छा को तृप्त करने के लिए और अपने को विजेता साबित करने के लिए वह स्त्री का इस्तेमाल करता है। 'विजेता' कहानी का 'मैं' रामायण से

---

1. अमरकांत, पलाश के फूल, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 119
2. अमरकांत, मछुआ, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 318

अपनी प्रतिहिंसा जुटाने का माध्यम बनाती है उसकी (रामायण की) पत्नी को। रामायण बहुत चलाक इन्सान था। वह हमेशा अपनी बुद्धिमानी की बात करते हुए अपने को विजेता साबित करता था। वह हमेशा दूसरी स्त्रियों का उनपर दीवानी होने की बात करता है और यह भी कहता है कि उन स्त्रियों में से कईयों के साथ उसने शारीरिक संबन्ध भी रखा है जो अपने पतियों से तृप्त नहीं है। वह कहता है - "यार पता नहीं क्यों जो स्त्री मेरे संपर्क में आ जाती है, वह हमेशा के लिए मेरी गुलाम हो जाती है।"[1] रामायण ऐसी बातें करता है जबकि वह भूल जाता है कि उसकी भी एक पत्नी है। रामायण कथावाचक के घर हमेशा बिना बुलाए घुसता था और उसकी बहन के पीछे चक्कर काटता रहता था। कभी भी उसने किसी को अपने घर आने नहीं दिया। क्योंकि उसकी पत्नी नीलम देहात की युवती थी और अधिक पढ़ी लिखी भी नहीं थी। वास्तव में नीलम अपने ही घर में अपने ही पति के साथ रहकर भी इस प्रकार के परायेपन का अनुभव करती थी। इसलिए कथावाचक को उसकी जिंदगी में घुसना बहुत आसान बात थी। वह रामायण से अपनी प्रतिसिंहा जुटाने के लिए उसकी पत्नी बेचारी नीलम का इस्तेमाल करता है। नीलम इसलिए उसके साथ संबन्ध रखती है कि वह ज़िंदगी में अकेली थी। वह कथावाचक से ईमान्दारी से प्यार करती है और अपना सब कुछ उसके सामने समर्पित करती है। कथावाचक उसे यह झूठा आश्वासन भी देता है कि वह हमेशा उसका साथ देगा। कथावाचक के दोहरे व्यक्तित्व को अमरकांत ने यों व्यक्त किया है - (कथावाचक का आत्मगत है) - "मेरे इन आश्वासनों का तो बस एक ही उद्देश्य

---

1. अमरकांत, विजेता, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 260

है - और वह है अपने शत्रु को अपमानित करना, बेइज्जत करना, उसकी शान और घमंड को सर्प के विषदत्तों की तरह तोड देना।"[1] कहानी का अंत तो कुछ भीषण निकला। रामायण कथावाचक और नीलम सो पकड लेता है और नीलम को बहुत बुरी तरह मारता है। कथावाचक को बाद में पता चलता है कि नीलम की पेट में तीन-चार महीने का बच्चा था। अस्पताल में नीलम की मृत्यु हो जाती है। कथावाचक को अपनी गलती का एहसास हो जाता है।

जान बूझकर गलती करने के बाद अंत में पछताने से क्या फायदा? समाज में आज भी ऐसी अनेक स्त्रियाँ मौजूद है जो अनजाने ही पुरुष की चाल में फंस जाती है और अंत में तडप-तडप कर मर जाती है। नीलम इसके लिए उदाहरण है। वह दोनों तरफ से शोषण की शिकार है। घर में पति द्वारा और बाद में अपने प्रेमी द्वारा उन्हें शोषण का शिकार होना पडा। कहानी में नीलम देहात की युवती थी। पढ़ी लिखी भी नहीं थी। ऐसी स्थिति में स्त्री को शिक्षा दिलाने की आवश्यकता की और कहानी संकेत देती है। समाज में स्त्री का उद्धार ऐसा ही संभव होगा। अपनी ज़रूरतों की पूर्ति के लिए स्त्री को एक वस्तू के रूप में इस्तेमाल करनेवाली पुरुष मानसिकता की ओर भी कहानी इशारा करती है। समाज से ऐसे पुरुषों को हमेशा के लिए निकालना आसान कार्य नहीं है लेकिन यह तो संभव है कि नारी को सजग करना, उसे सचेत बनाना। इसके लिए उसे शिक्षा की बहुत ज़रूरत है।

---

1. अमरकांत, विजेता, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 260

2.5.4.3.4 स्त्री प्रतिरोध

अमरकांत ने अपनी कहानियों में शोषण को झेलनेवाली और सबकुछ चुपचाप सहनेवाली नारी को ही नहीं अपने अस्तित्व संकट से बाहर निकलने के लिए संघर्ष के रणक्षेत्र में उतरनेवाली नारी के प्रतिरोधी व्यक्तित्व की झाँकियाँ भी प्रस्तुत की है। 'तूफान', 'प्रिय मेहमान', 'लडका-लडकी' आदि कहानियाँ इसकी बुलंद दस्तावेज़ है।

'तूफान' कहानी की सुमन सुशिक्षित युवती है। अपनी ज़िंदगी के छब्बीस वर्ष तक वह पिता के अनुशासन में रही। पिता की मर्ज़ी के अनुसार वह पली-बढी और उसकी पढ़ाई भी हुई। अब उसके लिए योग्य लड़का भी ढूँढ रहा है। ज़िंदगी की इस मोड़ में आकर सुमन के मन में बीती हुई ज़िंदगी के प्रति एक निराशा जाग उठती है और आगे की ज़िंदगी में कुछ कर दिखाने की इच्छा पैदा होती है। पिता से वह अपने मन की ख्वाइश बता देती है - "नरक की मर्मांतक पीडा से यह किसी भी हालत में कम नहीं है। बार-बार मेरे अंदर यह सवाल उठता रहा है कि क्या मैं एक झूठी ज़िंदगी नहीं जी रही हूँ, एक बनावटी और ओढी हुई ज़िंदगी, जिसमें अपना कुछ भी नहीं है....।"[1] अपनी बेटी की बातों के आगे हरिहर बाबू स्तब्ध रह जाता है। वह कहता है कि उसने जो कुछ भी किया है अपनी बेटी की सुरक्षा के लिए है। हरिहर बाबू भी दूसरे माँ-बाप की तरह जो अपने बच्चों को सही दिशा दिखाने में असफल रहे हैं, अपनी नाकामयाबी को छुपाने का प्रयत्न करता है।

---

1. अमरकांत, प्रिय मेहमान, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 433

सुमन कहती है - "सुरक्षा से मतलब आपका धन, आलीशान मकान और ऊँची हैसियतवाले परिवार में शादी से है तो करोडों लोगों में कितने लोग मिलेंगे जो अपने बेटे-बेटियों को ऐसी सुरक्षा दे पाते हैं? और ऐसी सुरक्षा सुविधाओं भरी नकली ज़िंदगी के अलावा सन्तान को क्या दे पाती है? ऐसी ज़िंदगी में अपना अर्जित किया हुआ क्या होता है? ऐसी ज़िंदगी में अपने निजी अस्तित्व की धडकन नहीं होती। ऐसी ज़िंदगी संघर्षों द्वारा मंजिल की यात्रा का संतोष नहीं देती, हार-जीत का अनुभव नहीं कराती। इस प्रकार की सुरक्षा सच्चाइयों का एहसास नहीं होने देती, बल्कि अधिक से अधिक भौतिक सुविधाएँ इकट्ठी करने की मशीन बना देती है, उन सुविधाओं का अभ्यस्त और मुहताज...।"[1] लड़कियों के प्रति समाज का जो दृष्टिकोण है उस पर भी प्रस्तुत कहानी के माध्यम से अमरकांत ने प्रहार किया है। जब हरिहर बाबू सुमन पर यह आरोप लगाता है कि वह लड़की है, वह अकेली कुछ कर ही नहीं सकती तो सुमन इसके लिए उचित जवाब देती है - "मैं जवान हूँ, अपनी लड़ाई खुद लड सकती हूँ, उस लड़ाई में खुशी-खुशी अपना बलिदान दे सकती हूँ। दूसरे के लिए आप गलत लड़ाई और गलत ढंग से जो लड़ाई लड रहे हैं उससे मैं आपको रोक सकती हूँ, मुक्त कर सकती हूँ।"[2] अंत में सुमन अपनी ज़िंदगी अपनी मर्ज़ी के अनुसार जीने का निर्णय लेती है।

प्रिय मेहमान कहानी में नीरज एक विश्वविद्यालय का शिक्षक है। बहुत ही मान-मर्यादाओं के साथ ज़िंदगी बितानेवाला है। लड़ाई-झंझट से दूर रहनेवाला,

---

1. अमरकांत, तूफान, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 81
2. वही

पत्नी से आदर के साथ पेश आनेवाला। उसकी पत्नी की अनुपस्थिति में प्रमीला वहाँ आती है। प्रमीला घर में मेहमान तो नहीं थी। उसका घर में आना जाना स्वाभाविक था। प्रमीला नीरज की पत्नी को भाभीजी बुलाती थी। उसके पूछने पर नीरज कहता है कि उसकी पत्नी मायका चली गई है। प्रमीला कहती है कि उसकी माँ घर में ताला लगाकर कहीं चली गई है इसलिए यहाँ नहाने के लिए आयी थी। नीरज को इसमें एतराज तो नहीं था, अपनी पत्नी की अनुपस्थिति में प्रमीला को अपने घर में देखकर उसके मन का शैतान जाग उठता है। वह सोचता है कि प्रमीला उससे बहुत प्रभावित है और प्रमीला के मन में उसके प्रति प्यार है। वह सोचता है - "नारी इस संसार की अत्यंत रहस्यमयी हस्ती है। प्रेम रोमांस में हर्ज़ ही क्या है, विशेष रूप से इस परिस्थिति में। घटनाशून्य ज़िंदगी भी कोई ज़िंदगी है? फिर वह तो कुएँ के पास गया नहीं, कुआँ ही उसके पास सरक आया...।"[1] यही उसके मन की सोच थी।

जब नहाने के बाद प्रमीला बाहर आयी तो नीरज उससे बहुत आदर्शपूर्ण बातें बताता है। वह कहता है कि यह संघर्ष का ज़माना है, तुमको अपना संघर्ष तेज़ करना होगा। बात तो सही है, आज का ज़माना तो संघर्ष का है। इस ज़माने में नारी को अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए तेज़ संघर्ष करना ही पड़ता है। उसको अपने अस्तित्व को तहस नहस करनेवाली कोशिशों को नाकामयाब बनाना ही चाहिए। इस प्रकार प्रमीला को सलाह देकर अपने को मर्यादापुरुषोत्तम साबित

---

1. अमरकांत, प्रिय मेहमान, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 433

करने का नाटक रचनेवाला नीरज जब अवसर मिलता है तो उसके हाथ पकडकर बत्तमीज़ी करने की कोशिश करता है। कहता है कि वह हाथ पकडकर भविष्य बताएगा। जब उसने प्रमीला का हाथ पकडा तब प्रमीला को उसके तेवर का पता चलता है। प्रमीला का आक्रोश लेखक ने इस प्रकार कहानी में प्रस्तुत किया है - "आपके जानने में और मेरे जानने में फर्क है। आप हाथ देखकर बताते हैं, मैं बिना हाथ देखे बता सकती हूँ। वह कटुता से बोली। ...भाई साहब, वह आहत क्रुद्ध सिंहिनी की तरह उसको देखती हुई अत्यधिक अभिमानपूर्वक बोली मैं अभी इसी समय आपका हाथ देखे बिना आपके बारे में सैकडों बातें बता सकती हूँ।"[1] कभी-कभी नारी का एक इशारा, या उसका एक शब्द अपने विरोध को सशक्त रूप से प्रकट करने में सफल होता है। यहाँ एक वाक्य में ही सही प्रमीला अपना प्रतिरोध जाहिर करती है।

'लडका-लडकी' कहानी का चंदन भी उच्चशिक्षा प्राप्त व्यक्ति है। तारा नामक सीधी-सादी लड़की को वह अपने पैरों पर खडे रहने का आह्वान देता है। दोनों में प्यार हो जाता है। चंदन के उपदेशों से तारा बोल्ड तो बन जाती है। चंदन बार-बार उससे कहता है कि उसे योग्य और स्वाभिमानी स्त्रियाँ पसंद है। तारा अपने पैरों पर खडे होने का और अपनी ज़िंदगी अपनी इच्छा के अनुसार जीने का निर्णय तो कर लेती है। लेकिन जिस पुरुष पर वह विश्वास पर बैठी थी वह उसे धोखा देता है। तारा चंदन से कहती है कि उसका पिता शादी के लिए राज़ी हो गया

---

1. अमरकांत, प्रिय मेहमान, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 436

है। 'शादी' सुनते ही चंदन का रंग बदल गया। उसकी मानसिकता के प्रति तारा का सख्त प्रतिरोध यों व्यक्त हुआ है - "प्यार की चरम परिणति है शादी, इसी मंज़िल तक पहुँचने के लिए संघर्ष और कुरबानियाँ की जाती हैं। लेकिन जब यह मंजिल प्राप्त हो जाती है तो आपको खुशी नहीं होती। इसका अर्थ है कि आपकी संघर्ष की बातें ज़िम्मेदारियों से बचने और स्वार्थ को छिपाने का बहाना है। मैं ने तो जीवन के आरंभ से ही संघर्ष किया है, आपने क्या किया है? आप भूख जानते हैं? आपको गरीबी जलालत, घुटन, ऊब, निराशा का पता है? साफ बात तो यह है कि आपको एक नारी-देह की ज़रूरत है और ज़रूरत है अपने अहंकार की तृप्ति की!"[1] इस प्रकार तारा ने स्त्री को भोग्या समझनेवाली पुरुष मानसिकता पर अपने शब्दों से चोट की है।

पुराने ज़माने से लेकर आज तक स्त्री की स्थिति में कोई बदलाव आया है या नहीं यह विचारणीय है। स्त्री हमेशा अपने अधिकारों से वंचित रही थी। पहला कारण तो यह था कि पुराने ज़माने में वह शिक्षित नहीं थी। पितृसत्तात्मक समाज के अनुशासन ने उसको बाँधकर रखा था। इस संदर्भ में सीमॉन द बोउअर का कथन सार्थक है - स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि बनायी जाती है। लेकिन आधुनिक युग में आते ही स्त्री शिक्षा हाज़िल करने लगी। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग होने लगी। वह जान गई कि समाज में उसका स्थान पुरुष के बराबर ही है। उसमें चेतनता जाग गयी। अपने को कुचलने के लिए उठनेवाले प्रत्येक कदम को

---

1. अमरकांत, लडका-लडकी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 445

नाकमियाब बनाने की शक्ति उसमें आ गयी। अपने ऊपर होनेवाले हर प्रकार के शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने की हिम्मत उसमें आ गयी। जड अवस्था से उसकी इच्छाएँ जाग उठीं। अमरकांत ने अपनी कहानियों में स्त्री के इन दोनों रूपों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उपर्युक्त कहानियाँ इसकी बुलंद दस्तावेज़ हैं।

2.5.5 बदलते पारिवारिक संबन्ध

परिवार समाज की एक मुख्य इकाई है। वह व्यक्ति और समाज के बीच की कडी है। व्यक्ति के निर्माण में परिवार ही सबसे मुख्य तत्व है। सभ्यता के विकास के पहले चरण में मनुष्य झुंड में रहना पसंद करता था। बाद में अन्नोपार्जन, अर्थोपार्जन तथा उनका उपभोग सामूहिक मंच पर होता था। कालांतर में यह सामूहिक परिवार कुछ इकाइयों में विभक्त होने लगा। सभ्यता के विकास के साथ-साथ पारिवारिक जीवन में काफी परिवर्तन आ गए। बदलती सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियाँ एवं बदलते जीवनमूल्य इस परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है। फलस्वरूप पारिवारिक संबन्धों में दरार आया, पारिवारिक संबन्ध शिथिल होने लगा। संयुक्त परिवार का विघटन होने लगा। ये सारी समस्याएँ अनेक सामाजिक विषमताओं और विसंगतियों के कारण बनी जिसको अमरकांत ने अपनी कहानियों में आवाज़ दी है। डॉ. गोबरधनसिंह शेखावत के शब्दों में "सामाजिक विषमताओं और विसंगतियों के प्रति इनकी कहानियों में गहरा व्यंग्य है।"[1] पारिवारिक जीवन की उलझनों को अमरकांत ने अपनी कहानियों के माध्यम से बखूबी उकेरा है।

---

1. गोबरधन सिंह शेखावत, नयी कहानी, नया परिवेश, पृ. 122

उनकी कहानियों में संयुक्त परिवार का विघटन, नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच का संघर्ष, प्रेमसंबन्धों का बदलता रूप, असंतृप्त वैवाहिक जीवन और उससे उत्पन्न समस्याएँ, पति-पत्नी के बीच की उलझनें आदि प्रमुख रूप से व्यक्त हुए हैं।

2.5.5.1 पीढ़ी संघर्ष

औद्योगीकरण और पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति से प्रभावित होकर बीसवीं शताब्दी तक आते ही जीवन की परिस्थितियाँ तेज़ी से बदलने लगीं। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज की नयी पीढ़ी मतलब युवा पीढ़ी ने इन सबसे प्रभावित होकर इन परिवर्तनों को जितनी जल्दी आत्मसात किया है, पुरानी पीढ़ी उतनी धीमी गति से ही उसे स्वीकार कर पाई। फलस्वरूप दोनों पीढियों के बीच वैचारिक संघर्ष उत्पन्न होने लगा। इस संघर्ष ने मुख्यतः परिवार और समाज को बहुत अधिक प्रभावित किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पुरानी और नई पीढ़ी के बीच की खाई और बढ़ती गई। इस पीढ़ी संघर्ष को अमरकांत ने कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है।

अमरकांत की 'उसका आना और जाना' इसी समस्या को उजागर करती है। आज की नयी पीढ़ी किस प्रकार अपने माता-पिता के साथ व्यवहार करती है, यह जानने के लिए यह कहानी काफी है। युवा पीढ़ी के लिए पिता एक संस्था है, जिसमें उसकी प्राथमिक शिक्षा हुई थी और ज़िंदगी में कुछ बनने तक उसका पालन पोषण हुआ था। लेकिन जब से वह अपने पैरों पर खडे होने लगा तब से उनकी (पिता) मान्यताएँ उसे अरोचक लगने लगती है, वे घर के लिए एक सजावट की वस्तू बनने लगे।

कहानी का पिता गोपालदास ने अपनी तीन बहनों, चार लडकियों और छह लडकों की शादियाँ अपने पुश्तैनी मकान में कराई थी। कारण उनका विश्वास था कि गृहदेवता वहीं पर निवास करते हैं। एक समय था जब जैसा उन्होंने चाहा, वैसा उन्होंने किया। किसी की मजाल नहीं थी कि कोई उसके सामने मुँह खोले। परंतु समय के बदलने के साथ-साथ परिस्थितियाँ भी बदल गयी। उनके दूसरे बेटे ने यह निर्णय लिया कि वह उसकी बेटी की शादी किसी हॉल में कराएगी, घर में नहीं। उसकी इज्जत का सवाल है। जिन्हें आशीर्वाद देना है, वहीं पर आइए।

गोपालदास को यह सुनकर बहुत बुरा लगा। परंतु उनकी उम्र सत्तर पार हो गयी थी। उनका शरीर नमक की तरह गल गया था। लेकिन बेटे की इच्छा के लिए वह राजी हो जाता है। गोपालदास मध्यवर्गीय बूढ़ा आदमी है। ट्रेन में जाते वक्त उनको अपने आसपास के मुसाफिरों से अपनी राम कहानी सुनाने की आदत है। इससे उन्हें बडी शान्ति मिलती है। परंतु इलहाबाद स्टेशन पर उतरते ही उनकी पत्नी ने उन्हें चेतावनी दी - "किसी की बात में पडने की ज़रूरत नहीं। अधिक बोलने से फायदा? यह गाजीपुर तो है नहीं, यहाँ एक से एक बडे लोग आएँगे, लड़के की इज्जत-आबारु है, कोई बात मुँह से निकल आने पर ज़िंदगी भर कहने के लिए जाएगा।"[1]

इलाहाबाद में अपने लडके का आलीशान मकान, कार, स्कूटर, नौकर-चाकर हर तरफ चमाचम देखकर उनका हृदय गर्व से भर उठा, जैसे वह एक पुराने

---

1. अमरकांत, उनका जाना और आना, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 462

वटवृक्ष हो और उसकी शाखाएँ प्रशाखाएँ चारों ओर फैलकर एक सुखद वातावरण की सृष्टि कर रही हों। हर पिता को लगता है कि बुजुर्ग होने के नाते गंभीर कार्यों का निर्णय लेते वक्त लडकों को उनसे राय-मशबरा करना चाहिए। परंतु उनका बेटा रवि न उनके पास आता है, न ही उनसे कुछ पूछता है। "रविकुमार उनकी ओर उडती दृष्टि से देखता और चला जाता, जैसे बाज़ार में किसी व्यक्ति को देखकर भी कोई अनदेखा कर दें।"[1] रवि के बच्चों ने भी उनके साथ अपरिचित सा व्यवहार किया। कोई उनके पास आकर बैठा तक नहीं। गोपालदास हमेशा रवि के पास ही खडे रहे ताकि वह मेहमानों से उनका परिचय करवा दे। लेकिन रवि को उनकी ओर देखने की फुर्सत भी नहीं थी। जब बारात आने का समय आ गया तो रवि की पत्नी दीप्ति सब लोगों से कहती है - "....यहाँ रे-बरे न कीजिए। बारात का रिसेप्शन होने जा रहा है। वे बडे फारवर्ड हैं, ऐसा न हो कि आपमें से कोई बैठी रह जाएँ। तब बडी बदनामी होगी। हाँ, रिसेप्शन के बाद डिनर होगा, उसमें चम्मच से खाइएगा, हाथ से नहीं....।"[2] इन सबसे तो गोपालदास को बडा दुःख हुआ। दूसरे दिन जब वह चलना चाहा तो रवि ने औपचारिकता निभाई। कुछ दिन रहने का आग्रह प्रकट किया तो गोपालदास ने ठहरना उचित नहीं समझा। युवा पीढ़ी और पुरानी पीढी के बीच संस्कारों की जो टकराहट उत्पन्न होती है, वह पिता और पुत्र के बीच भी दूरी उत्पन्न कर देती है।

---

1. अमरकांत, उनका जाना और आना, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 464
2. वही, पृ. 468

'लडका-लडकी' कहानी की तारा की बात ठीक उल्टी है। उसकी माँ पुराने आचार-विचारों, रीति-रिवाज़ों को मानकर बैठी है। लेकिन तारा पढ़ना चाहती है। वह अपने पैरों पर खडे होना चाहती है। लेकिन माँ राज़ी नहीं होती, वह जल्दी ही उसकी शादी कराना चाहती है। जब तारा माँ से अपने मन की बात कहती है तो माँ पूछती है - "तू पढेगी क्या, सारे खानदान की नाक कटाएगी! रह जबान लडाने का मजा चखाती हूँ!"[1] माँ उसको मारती है तो तारा अपने निर्णय पर अडिंग रहती हुई कहती है - "मार कर तुम मेरी जान ले सकती हो, लेकिन मेरे विचारों को बदल नहीं सकती।"[2] समाज में ऐसे लोग भी विद्यमान है जो पुराने आचार संहिताओं और परंपरागत रूढियों के कल्पित ढाँचे से बाहर निकलना ही नहीं चाहते। 'असमर्थ हिलता हाथ' की लक्ष्मी भी इसके लिए उदाहरण है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि अमरकांत ने पीढ़ियों के बीच की इस टकराहट को नज़दीकी से देखा है और ईमान्दारी के साथ अभिव्यक्त किया है। वे स्थापित करते हैं कि नयी पीढ़ी को नए मूल्यों की खोज अवश्य करना चाहिए लेकिन पुराने मूल्यों को पूर्ण रूप से नकारना भी नहीं चाहिए। दोनों में बुराइयाँ है और अच्छाइयाँ भी। बुराइयों को नकारना चाहिए और अच्छाइयों को आत्मसात करना भी चाहिए।

---

1. अमरकांत, लडका-लडकी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 442
2. वही, पृ. 443

2.5.5.2 पति-पत्नी

परिवार को सही ढंग से आगे ले जाने में पति-पत्नी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पति और पत्नी के बीच के रागात्मक संबन्ध ही परिवार की नींव है। लेकिन आज पारिवारिक संबन्धों में सबसे अधिक दरार पति-पत्नी के बीच दिखाई पड़ता है। दो विभिन्न संस्कृतियों और पारिवारिक मान्यताओं के बीच पले-बडे व्यक्तियों के बीच संघर्ष होना स्वाभाविक ही है। लेकिन पति-पत्नी के बीच का रागात्मक संबन्ध जो, उनके रिश्ते को मजबूत आधार प्रदान करता है, वह आज क्षीण होता जा रहा है। सब कहीं एक प्रकार की यांत्रिकता छा गई है। "आधुनिक युग की परिस्थितियों ने मानव जीवन को यांत्रिक बना दिया है। उसमें जीवन की स्पंदनशीलता नहीं है। सभ्य समाज के नियमों ने उसे कृत्रिम भी कर दिया है। प्राणी बंधनों को तोडकर जीवन के उन्मुक्त प्रसार के लिए छटपटा रहा है।"[1] यही कारण है कि वैचारिक और दार्शनिक धरातल पर स्त्री और पुरुष के बीच तनाव उत्पन्न होने लगा।

अमरकांत ने स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी के बीच उत्पन्न छोटे-छोटे झगडे, उन झगडों के बीच उन रिश्तों का गढ़बंधन, तनाव, पति या पत्नी के चारित्रिक हीनता के कारण विवाहेतर संबन्ध आदि को अपनी कहानियों में दर्ज किया है।

'केले पैसे और मूँगफली' में आनंद मोहन दैनिक समाचार पत्र के उप-संपादक है। महीना खतम होते-होते पैसा और राशन दोनों खतम हो जाते हैं।

---

1. रसवंती, नवंबर 1969 - फरवरी 1970, पृ. 15

उसका छोटा बच्चा है राजीव। वह क्या जाने? केलेवाले के आने पर वह केला खरीदने के लिए जिद करता है। इसको लेकर पति और पत्नी के बीच झगडा उत्पन्न हो जाता है। दोनों एक दूसरे को कोसने लगता है। अंत में वह अखबार बेचने का निर्णय कर लेता है। अखबार बेचकर उसे छह आने मिल जाता है। छह आने जेब में आते ही वह राजा बन जाता है। वह क्या-क्या कल्पनाएँ करने लगता है। उसने तीन आने के आधा दर्जन केले और छः पैसे के बिस्कुट एक आने की दो कैंची सिगरटें ली। उसकी जेब में सिर्फ दो पैसे बचे थे। उसे अचानक खयाल आया कि उसकी पत्नी को मूँगफलियाँ बहुत पसंद है। दो पैसे की मूँगफलियाँ तो किसी मोटे खोमचेवाले से मिल ही नहीं सकती। अतः फिर वह गरीब खोमचेवाले की तलाश करता है। दस मूँगफलियाँ लेकर घर आता है।

अखबार बेचकर जो पैसा मिला उससे वह बहुत ही संतुष्ट बन जाता है और अपनी मन की इच्छा के अनुरूप अपने लिए और बच्चे के लिए आवश्यक चीज़ें खरीदता है। अचानक उसे पत्नी की याद आ जाता है, उसको याद आता है कि पत्नी को मूँगफलियाँ पसंद है। आर्थिक तंगी से उत्पन्न मानसिक तनाव और घुटन के बीच भी पति-पत्नी के आपसी रिश्ते और प्यार को मोहन और उसकी पत्नी के माध्यम से अमरकांत ने प्रस्तुत किया है। उनकी कहानी 'दोपहर का भोजन' की सिद्धेश्वरी भी पति और परिवार के प्रति असीम श्रद्धा और प्रेम जतानेवाली नारी है। परिवार के बीच आपसी संबन्ध को बनाए रखने के लिए वह अथक प्रयत्न करती रहती है। इस प्रकार अमरकांत ने तनावों के बीच बनते पति-

पत्नी के रिश्ते को बखूबी अंकित किया है। 'शाम', 'पेड-पौधे', स्वामी आदि कहानियों में भी मध्यवर्गीय परिवार में पति-पत्नी के बीच उत्पन्न उलझनों पर अमरकांत ने प्रकाश डाला है।

2.5.5.2.1 असंतृप्त वैवाहिक जीवन एवं विवाहेतर संबन्ध

अमरकांत की कहानियों में केवल पारिवारिक जीवन के शुक्ल पक्ष ही नहीं उसके कृष्ण पक्ष को भी आवाज़ मिली है। उनकी कहानियों में बनते-बिगडते संबन्धों का खुला वर्णन मिलता है। पति या पत्नी की चारित्रिक जटिलताओं के कारण बिगड गए वैवाहिक जीवन की त्रासदी को भी उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। 'विजेता' कहानी में रामायण विवाहित है। उसके पास अपनी पत्नी को देने के लिए समय नहीं है। उसकी पत्नी नीलम देहात की युवती थी अधिक पढ़ी लिखी भी नहीं थी। वह अपने पति के प्यार से पूरी तरह वंचित थी। अपने ही घर में पराया-सा जीवन व्यतीत करना ही उसकी नियति थी। अपनी पत्नी की चिंता किए बगैर दूसरी लड़कियों को पटाना रामायण का शौक था। नीलम हमेशा घर में अकेली थी। वह उन सब बातों से हमेशा वंचित रहती थी जो पति से एक पत्नी को मिलनी चाहिए थी। ये सब जब एक अन्य पुरुष से मिलने लगे तो पहले उसमें थोडी-सी हिचहिचाहट थी लेकिन बाद में वह उससे प्यार करने लगी। नीलम की मानसिकता को लेखक ने यों व्यक्त किया है - "उसको एक सहारे की ज़रूरत थी और उसने खुशी-खुशी मुझ पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। कुछ ही दिनों में उसके चेहरे पर दुःख और उदासी की बदली साफ हो गयी। आँखें

प्यार से चमकने लगीं।..... दुनिया में आपको छोडकर अब मेरा कोई नहीं...।"[1] इसमें नीलम की कोई गलती नहीं थी कि उसने कथावाचक के साथ संबन्ध रखा। पति होने के नाते जिन कर्तव्यों को निभाना रामायण का दायित्व था, उनसे वह हमेशा विमुख रहा। परिणाम यह निकला कि उसका परिवार बिखर गया। उसके हाथों से ही नीलम की हत्या हुई। और वह गिरफ्तार हो गया। इस प्रकार पारिवारिक संबन्धों में खासकर पति-पत्नी के संबन्ध में आनेवाले बिखराव को अमरकांत ने दर्शाया है। वैवाहिक जीवन में पति और पत्नी समान अधिकार के हकदार है। पति का पत्नी के प्रति और पत्नी का पति के प्रति कुछ कर्तव्य अवश्य होता है जिसको निभाने में किसी एक की चूक हुई तो ज़िंदगी बिखर जाएगी। रामायण इसके लिए सबसे उत्तम उदाहरण है।

'प्रिय मेहमान' कहानी का नीरज शादीशुदा है। फिर भी अपनी पत्नी की अनुपस्थिति में वह दूसरी लडकी के साथ बत्तमीज़ी करने की कोशिश करता है। 'स्वामी' मनोहर लाल शर्मा और नीलिमा की कहानी है। पति और पत्नी के रिश्ते के बीच का सबसे बडा शत्रु होता है शक। विश्वास ही उस संबन्ध की आधारशिला होती है। यदि विश्वास टूट जाय तो रिश्ता भी टूटेगा। प्रस्तुत कहानी में नीलिमा बहुत सुंदर युवती थी। वह हमेशा हँसती ही रहती है। मनोहरलाल शर्मा को यह पसंद न था। वह उस पर हमेशा संदेह करता था। एक बार मनोहरलाल नीलिमा से पूछता है - "तुम क्यों हँसती हो? तुम खानदान को कलंकित करने पर तुली हुई

---

1. अमरकांत, विजेता, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 264

हो। तुम्हारे दिल में ज़रूर कोई खोट है।"[1] इतना ही नहीं, घर की गाय की देखभाल के लिए आए हरिया, जो नीलिमा के लिए अपने पिता समान थी, उसके कुर्ते पर सिन्दूर की छोटी-सी लकीर देखकर मनोहरलाल उसके रिश्ते पर संदेह करता है और हरिया को मार डालता है। इस प्रकार नीलिमा और मनोहरलाल की ज़िंदगी बिखर जाती है।

इस प्रकार अमरकांत ने वैवाहिक जीवन के उलझनों को प्रस्तुत किया है। तद्वारा यह सिद्ध करने की कोशिश भी उन्होंने की है कि पति-पत्नी के रागात्मक संबन्ध से ही वह रिश्ता कायम रहेगा।

परिवार हमारे सामाजिक जीवन का मूलाधार है। परिवार में व्यक्ति व्यक्तित्व तथा समस्त सामाजिक संबन्धों का विकास होता है। इस प्रकार परिवार समाज की अत्यंत महत्वपूर्ण इकाई है। यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं होगी कि समाज रूपी विशाल भवन की नींव में परिवार रूपी ईंट लगी हुई है। यदि परिवार का द्वार हटा लिया जाय तो समाज धराशायी हो जायेगा। समाज की प्रगति के लिए पारिवारिक समस्याओं का निराकरण करना आवश्यक है। अमरकांत की उपर्युक्त कहानियाँ इसका आह्वान अवश्य करती हैं।

2.5.5.3 अंतर्जातीय विवाह

विवाह रूपी संस्था जिस समय से कायम थी, उस समय से लेकर यह संस्था भी कडे अनुशासनों में बंधी हुई दिखाई देता है। धर्म और जाति के बंधनों के

---

1. अमरकांत, स्वामी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 1, पृ. 334

अंतर्गत ही यह कार्यरत थी। व्यक्ति के मन की इच्छा के अनुरूप दूसरी जाति या धर्म के लडके या लडकी के साथ शादी करने की छूट नहीं थी। इसी कारण से पुराने ज़माने में चाहकर भी अंतर्जातीय विवाह बहुत कम ही होते थे। लेकिन ज़माना बदलने के साथ-साथ लोगों की मानसिकता में भी बदलाव आया है। शिक्षित पीढ़ी अपनी इच्छा के अनुसार जीने का साहस दिखाने लगी। अमरकांत ने अपनी कहानियों में एक ओर परिवार के बंधनों में पडकर अपनी इच्छा और प्यार को कुरबान करनेवाले प्रेमी-प्रेमिका का चित्रण किया है तो दूसरी ओर बंधनों से मुक्त होकर स्वतंत्र ज़िंदगी जीने का निर्णय करनेवाले शिक्षित समाज को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

'असमर्थ हिलता हाथ' में मीना दिलीप से प्यार करती है। दोनों शादी करना चाहती है लेकिन दिलीप दूसरी जाति का युवक है। मीना की माँ लक्ष्मी यह नहीं चाहती कि अपनी लडकी की शादी दूसरी जाति के युवक के साथ हो। मीना माँ से बहुत प्यार करती थी। इसलिए माँ की इच्छा के बिना वह दिलीप से शादी नहीं कर सकती थी। अंत में जब लक्ष्मी की मृत्यु हो जाती है, तब मीना के रास्ते में टाँग अड़ाते हुए परिवारवाले आ जाते हैं। इस प्रकार मीना और दिलीप की प्रेम कहानी का वहीं अंत हो जाता है।

'पक्षधरता' कहानी इससे बिलकुल भिन्न है। उसमें राकेश एक गरीब लडकी से प्यार करता है। उसकी प्रेमिका दिव्या बहुत ही गरीब घर की लडकी थी, जिसकी पाँच बहनें थीं। उसके पिता किसी स्कूल में क्लर्क था। दोनों ने ईमान्दारी से प्यार किया। परंतु दोनों की जातियाँ भिन्न थीं। इसलिए दोनों परिवारों ने उग्ररूप

धारण कर लिया। राकेश विश्वविद्यालय का लेक्चरर था। उसने घर से सहायता लेनी बन्द कर दी। जब लड़की को भी नौकरी मिली तो दोनों ने शादी कर लीं। 'तूफान' कहानी की सुमन अपने पिता की इच्छा के अनुरूप ज़िंदगी बितानेवाली युवती थी। पिता अपनी बेटी की शादी बडे-बडे अफ्सरों के साथ करना चाहती थी। लेकिन पिता की इच्छा के अनुरूप लडका मिलता ही नहीं था। सुमन का तो दिल बैठ गया। वह पढ़ी-लिखी युवती है। अंत में वह अपने मन पसंद लडके से शादी करने का निर्णय कर लेती है। वह कहती है - "नहीं पापा, मैं आपसे माफी चाहती हूँ। मैं यह सब कहना नहीं चाहती थी, मैं तो यह बताने आयी थी कि मैं बोझ नहीं हूँ, आप मेरेलिए कोई चिंता न करें.... मैं ने एक फैसला ले लिया है....।"[1] सुमन अपनी इच्छा के अनुसार जीने का निर्णय कर लेती है।

इस प्रकार अमरकांत ने अंतर्जातीय विवाह की समस्या को पाठकों के सम्मुख रखा है। ये दोनों प्रकार के पात्र आज भी समाज में मौजूद है। कुछ लोग तो आज भी बंधनों में बंधे हुए हैं और कुछ में तो धैर्य और साहस है। जो बंधनों के घेरे में हैं उन लोगों को तो दूसरों की चुनी हुई ज़िंदगी भोगनी पडती है। जिसमें धैर्य और साहस है वे तो अपनी इच्छा के मुताबिक स्वतंत्र ज़िंदगी बिताते हैं।

2.5.6 निष्कर्ष

समाज संबन्धों का जाल है। व्यक्ति जीवन के हर पहलू सामाजिक जीवन को प्रभावित करते हैं। साहित्य समाज का दर्पण तो होता ही है। समाज के हर क्षेत्र

---

1. अमरकांत, तूफान, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, खंड 2, पृ. 82

की विसंगतियों का दृश्य उसमें प्रतिबिंबित होता है। हिन्दी साहित्य के कहानीकारों ने अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता की कसौटी में कसकर अपनी कहानियों का सृजन किया है। अमरकांत इस दृष्टि से सृजनधर्मी लेखक हैं। अमरकांत की कहानियों का समाज स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज है। उनकी कहानियों का सामाजिक आधार मध्यवर्ग है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत उनकी कहानियों में चित्रित स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज के जीवनानुभवों, जिजीविषाओं के साथ-साथ स्वतंत्रता के बाद उनकी ज़िंदगी में आए सभी प्रकार के परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में व्यक्ति मोहभंग के शिकार हुए। उसके सपनों पर तुषारपात हुआ। वहीं से उसकी ज़िंदगी समस्याओं के शिकंजे में पड गयी। जिन समस्याओं का सामना उन्हें परतंत्र भारत में करना था, स्वतंत्र भारत में वे तेज़ होती गई। आदमी तडप-तडपकर जीने के लिए अभिशप्त बन गया। समस्याओं ने नया रूप धारण कर लिया। अमरकांत ने इन लोगों की ज़िंदगी को अपनी आँखों से देखा है और अपने आप भोगा भी है। इसीलिए उनकी कहानियाँ सामाजिक पक्ष को सही मायने में प्रस्तुत करने में सर्वोपरी सक्षम हैं।